CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वनस्थली विद्यापीठ

'संस्कृता' विभाग

शिक्षा-क्रम

वनस्थली (जयपुर राज्य)

१ जनवरी, १९४७

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

वर्ग संख्या................ प्राप्ति-संख्या......................

ग्रन्थ-कार्ड

श्री गणेश वर्णी दि० जैन (शोध) संस्थान

ग्रन्थागार

नरिया, वाराणसी-५

ग्रन्थ नाम वनस्थली विद्यापीठ

लेखक..

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२६०२

उद्देश्य और शिक्षाक्रम

वनस्थली विद्यापीठ का उद्देश्य छात्राओं को ऐसी शिक्षा देना है जिससे वे सफल गृहणी और माता के साथ ही साथ एक जागरूक और सफल नागरिक भी बन सकें और घर बाहर के जीवन में रुचि रखते हुए उसमें यथाशक्ति योग भी दे सकें। उक्त उद्देश्य को दृष्टिगत रख कर भारतीय संस्कृति और विशुद्ध राष्ट्रीयता के आधार पर विद्यापीठ के पञ्चमुखी शिक्षा-क्रम का निर्माण किया गया है जिसके पांचों अङ्ग इस प्रकार हैं :— (१) नैतिक शिक्षा (२) शारीरिक शिक्षा (३) गृहस्थ शिक्षा (४) ललित कला शिक्षा और (५) पुस्तकीय शिक्षा।

शिक्षाक्रम के विभाग और विषय

समूचा शिक्षा-क्रम निम्न दो विभागों में विभाजित किया गया है :—(१) "संस्कृता" विभाग और (२) बाह्य परीक्षा विभाग।

'संस्कृता' विभाग में उस अनिवार्य शिक्षा का समावेश किया गया है जो प्रत्येक लड़की के लिये आवश्यक समझी जानी चाहिये। इस विभाग को १ से ८ तक की कक्षाओं में विभाजित किया गया है और इस के लिये विद्यापीठ का अपना स्वतन्त्र पाठ्यक्रम है जो विस्तार पूर्वक आगे दिया गया है।

बाह्य परीक्षा विभाग में लड़कियों को राजपूताना बोर्ड की हाईस्कूल और इण्टरमीजियट तथा आगरा यूनिवर्सिटी की बी० ए० और एम० ए०, (अर्थ शास्त्र तथा हिन्दी) तथा भातखण्डे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

यूनिवर्सिटी (लखनऊ) की सङ्गीत, जे० जे० स्कूल ऑव आर्टस् (बम्बई) की ड्राइंग और चित्रकला और निखिल भारतवर्षीय आयुर्वेद सम्मेलन तथा हिन्दी साहित्य सम्मेलन (प्रयाग) की आयुर्वेद की परीक्षाओं के लिये शिक्षा दी जाती है। इस विभाग में पुस्तकीय शिक्षा का पाठ्यक्रम तो परीक्षाओं के अनुसार होता है; पर छात्राओं की पञ्चमुखी शिक्षा का भी पूरा ध्यान रखा जाता है। ललितकला की शिक्षा के लिये छात्राओं को यथा सम्भव सुविधा देने का प्रयत्न किया जाता है। गृहस्थ शिक्षा के लिये कताई तथा पाक आदि के कार्य-क्रम में और शारीरिक शिक्षा की दृष्टि से खेल-व्यायाम में भाग लेना अनिवार्य है। नैतिक शिक्षा के लिये भी आवश्यक व्यवस्था की जाती है।

'संस्कृता' विभाग

:१:

नैतिक शिक्षा

विद्यापीठ के शिक्षा-क्रम में सर्व प्रथम स्थान नैतिक शिक्षा को दिया गया है। इस शिक्षा के द्वारा जहां एक ओर हम छात्राओं को अपने प्राचीन धर्म-ग्रन्थों तथा विभिन्न धर्मों के मूल तत्वों का संक्षिप्त परिचय और ज्ञान कराना चाहते हैं और इसके आधार पर उनमें सर्व-धर्म समन्वय का भाव उत्पन्न करना चाहते हैं, वहाँ दूसरी ओर हमारा यह भी प्रयत्न कि यह परिचय और ज्ञान छात्राओं में वे तमाम मानवोचित और व्यावहारिक गुण पैदा करने में सहायक हो जिनसे वे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भली बन सकें, उनमें समाज-सेवा की वृत्ति जागृत हो और वे जीवन में सफल हो सकें। उक्त उद्देश्य को ध्यान में रख कर नैतिक शिक्षा सम्बन्धी पुस्तकीय ज्ञान देने के लिये एक विस्तृत पाठ्यक्रम तैयार कराने का प्रयत्न किया जा रहा है। यह पाठ्यक्रम जब तैयार हो जाएगा तो उसे पृथक् रूप में प्रकाशित कर दिया जायगा।

पुस्तकीय ज्ञान के अतिरिक्त वास्तविक नैतिक शिक्षा तो व्यावहारिक जीवन के द्वारा ही मिल सकती है। विद्यापीठ में नैतिक शिक्षा के इस पहलू पर बराबर ध्यान दिया जाता है और इसका प्रयत्न किया जाता है कि छात्राओं को ऐसा स्वस्थ और पवित्र वातारण मिले कि उनके जीवन में नैतिक गुणों का अधिक से अधिक विकास हो।

:२:

शारीरिक शिक्षा

इस में कई प्रकार के मनोरञ्जक और उपयोगी खेलों और व्यायामों का समावेश किया गया है जैसे तैरना, घुड़सवारी, साइकिलसवारी, जम्बिया, तलवार, भाला, लाठी, लेजिम, वॉलीबॉल, कबड्डी, बास्केट बॉल, राउण्डर, यौगिक व्यायाम आदि। इन सब खेल व्यायामों का उद्देश्य यह है कि छात्राओं में शक्ति, स्फूर्ति और साहस आये तथा वे स्वस्थ रह सकें।

खेलों और व्यायामों का सङ्गठन भारतीय तथा पाश्चात्य वीराङ्गनाओं विदुला, तारा, कमला, वीरा, अहिल्या, लक्ष्मी, जोन के नाम पर है। बालिकाओं में दलों के नेतृत्व का भार

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

देकर उत्तरदायित्व, अनुशासन और सङ्गठन की वृत्ति उत्पन्न की जाती है। ये सब दल वनस्थली के 'वीरबाला संघ' के तत्वावधान में सेवा तथा शक्ति की साधना करते हैं।

:३:

गृहस्थ शिक्षा

(क) शूची-शिक्षा (Needle work)

कक्षा–१

(१) सुई पिरोना, धागे में गांठ लगाना, सीधा टांका लगाना, तुरपन कराना, कार्ड के ऊपर एम्ब्राइडरी से अक्षर, जानवर, पक्षी आदि बनाना।

कक्षा–२

(१) कक्षा १ में किये हुए कामों का विशेष अभ्यास।
(२) रूमाल पर तुरपन, बखिया, जाली आदि बनाना।
(३) दो सलाई पर फन्दे डाल कर उल्टा-सीधा बुनना।
(४) क्रूशिये के काम का आरम्भ।

कक्षा–३

(१) कक्षा २ में किये हुए काम में विशेष अभ्यास।
(२) क्रोशिये से रूमाल तथा फूल बुनना।
(३) दो सलाई पर गुलूबन्द स्वेटर सादी बुनाई से बुनना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) सादा कसीदे के फूल-पत्ती बनाने का अभ्यास करना।
(५) काज बनाना सीखना, मोती के काम का आरम्भ(जैसे माला आदि बनाना)।

कक्षा—४

(१) कक्षा ३ में किये हुए कार्य में विशेष अभ्यास तथा सफ़ाई।
(२) काश्मीरी कसीदा सिखाना।
(३) क्रूशिये से बेलें आदि विशेष काम करना।
(४) दो सलाई से नई तथा भिन्न डिज़ाइन डाल कर सुन्दर स्वेटर बनाना।
(५) काज बनाने में निपुणता। मोती के काम में विशेषता।
(६) पैवन्द लगाना तथा सादा पेटीकोट बनाना।

कक्षा—५

(१) कटाई—पाजामा तथा ब्लाउज काटना व सुन्दर ढङ्ग से सीना सीने में विशेष सफ़ाई।
(२) कक्षा ४ के कार्य में विशेष अभ्यास, कसीदे और ऊन के तथा क्रूशिये के कार्य में विशेष सफाई।
(३) दो सलाई पर बच्चों के मोजे बनाना तथा भिन्न-भिन्न डिज़ाइन डालना।
(४) दो सूती कार्य आरम्भ किया जाय।

कक्षा—६

(१) कटाई—कक्षा ५ में बताई हुई चीजों का विशेष अभ्यास तथा निकर और कली का पेटीकोट काटना और सीना।
(२) नडिल के कार्य में विशेष योग्यता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) दोसूती भली भाँति आना तथा प्रत्येक प्रकार के दोसूती के कार्य वह डिज़ाइन देख कर डालना।

(४) ऊन और क्रूशिये में विशेष योग्यता।

(५) कसीदे में डिज़ाइन के अतिरिक्त अन्य वस्तुओं का बनाना जैसे किसी चित्र का नमूना और नाम के अक्षरों को बनाना।

कक्षा–७

(१) कटाई—फ्रॉक और कमीज़ काटना और सुन्दर ढङ्ग से सीना।

(२) ऊनी फ्रॉक बुनना।

(३) चार सलाई पर छोटे और बड़े मोज़े बनाना। मर्दानी स्वेटर और ऊनी टोपा बनाना।

(४) अन्य प्रकार के नए कार्य से जानकारी।

(५) कक्षा ६ में किये हुए कार्य में विशेष अभ्यास।

कक्षा–८

(१) कटाई—छोटे बच्चों के कपड़े सीने में विशेष अभ्यास जैसे झँगला, जांघिया इत्यादि।

(२) पिछली कक्षाओं में बनाये हुए कपड़ों की कागज़ पर फिर से कटिंग और सभी कार्यों का दुहराना।

(३) जम्पर और फ्रॉक बनाना।

(ख) सूत्र-शिक्षा (Spinning)

विद्यापीठ के शिक्षा-क्रम में कताई को भी एक अनिवार्य स्थान प्राप्त है और प्रत्येक छात्रा के दैनिक कार्य-क्रम में सामूहिक

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कताई का भी समावेश किया है। इनके दल भी क्षमता के अनुसार तकली, धनुष तकली अथवा यरवदा चक्र का उपयोग करते हैं।–

(ग) पाक तथा गृहचर्या

कक्षा–१ और २

इन कक्षाओं में छात्राओं की छोटी उम्र होने के कारण कोई निश्चित पाठ्य-क्रम नहीं हो सकता। उनके शौक को देख कर कुछ छोटे-मोटे काम सिखाये जा सकते हैं। जैसे अनाज साफ करना, साग काटना, फुलके वेलना आदि। सफाई का भी थोड़ा-सा कार्य-क्रम रखा जा सकता है।

कक्षा-३

(१) अनाज साफ करना।
(२) सफाई (बर्त्तन, कमरे, चौक आदि की)
(३) साग काटना
(४) पाक (पराठा, साग सादा, सूखा और रसदार, खिचड़ी, रायता, चटनी)।
(५) सामूहिक पाक—फुलके वेलना, लोई बनाना।

कक्षा–४

(१) अनाज साफ करना।
(२) सफाई।
(३) साग काटना।
(४) पाक (फुलका, दाल, सादी कढ़ी, थूली, पिछले साग के कुछ विशेष ढङ्ग, नये रायते) शरबत।
(५) सामूहिक पाक—फुलके वेलना, रखना, चुपड़ना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा—५

(१) अनाज साफ करना, छानना ।
(२) सफ़ाई ।
(३) साग काटना ।
(४) पाक[पिछले पाठ्यक्रम को कुछ विशेषता के साथ, चावल, पूड़ी, हलुआ, पकौड़ी, मठरी, शकरपारे, चाय, दाल और साग का पानी (सूप)]।
(५) सामूहिक पाक—फुलके वेलना, और सेंकना ।

कक्षा—६

(१) अनाज साफ करना, फटकना !
(२) सफाई और धुलाई ।
(३) साग काटना, पीसना (१२ साल से छोटी लड़कियों से पीसना नहीं कराना है), कलई करना ।
(४) पाक—पिछले को दुहराते हुए, तहरी खीर, कचौड़ी, समोसे, बड़े, गुलाबजामुन, साबूदाना, मुंगौड़ी)
(५) सामूहिक पाक ।

कक्षा—७

(१) अनाज साफ करना ।
(२) सफाई, धुलाई, रँगाई ।
(३) साग काटना, पीसना, दलना, कलई करना ।
(४) पाक—पिछला दुहराते हुए, मीठे चावल, वाटी, वाफले, चील्हे चूरमा, नुकती दाने, मालपूए, मावा, मुरब्बे, अचार, पापड़, बाली, बड़े ।
(५) सामूहिक पाक ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा–८

(१) अनाज साफ करना।
(२) सफ़ाई, धुलाई, रँगाई आदि।
(३) साग काटना, पीसना, दलना, कलई करना।
(४) पाक—(पिछले कामों को दुहराते हुए, नाश्ते तथा दावत की चीजें, अलग-अलग त्यौहारों के पकवान बनाना, बीमारों के लिये पेय तथा खाना)।
(५) सामूहिक पाक।

नोट—सामूहिक पाक के विशेष अभ्यास के लिये विभिन्न अवसरों पर तथा महीने में कम से कम एक बार छात्रायें विशेष भोजन बनाया करें।

:४:

ललितकला–शिक्षा

(क) संगीत

कक्षा–१

संगीत विषय से रुचि उत्पन्न करने की दृष्टि से यथाशक्ति ग्रामोफोन, रेडियो आदि साधनों को उपयोग में लाना चाहिये। बच्चों की रुचि के अनुसार कुछ छोटे-छोटे गीत सिखाना उचित होगा।

गायन—

(अ) सरल गीत-(जिनका आधार शास्त्रीय संगीत हो) ज्यादा से ज्यादा तीन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(आ) अभिनय गीत-दो या तीन।

कक्षा-२

इस कक्षा में भी सङ्गीत से रुचि बढ़ाने की ओर विशेष प्रयत्न होना चाहिये। इस दृष्टि से ग्रामोफोन आदि साधनों को उपयोग में लाना चाहिये।

गायन—

(अ) सरल गीत-(जिनका आधार शास्त्रीय सङ्गीत हो) कम से कम पाँच गीत सिखाना चाहिये।

(ब) अभिनय गीत-कम से कम तीन।

कक्षा ३

इस कक्षा में, पिछली दोनों कक्षाओं में मिली हुई शिक्षा तथा प्राप्त हुई रुचि को क्रियात्मक रूप देना है।

गायन—

(अ) शास्त्रीय संगीत-राग यमन, बिलाबल तथा खमाज इन रागों में एक-एक सरगम तथा एक गान सिखाना चाहिये। इन्हीं रागों में छोटे तथा सरल अलंकार भी सिखाते जाँय।

(ब) राष्ट्रगीत-एक।

(स) साधारण गीत-इनकी संख्या अधिक से अधिक दो हो। इसमें छोटे-छोटे भजनों का भी समावेश होना चाहिये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ङ) ताल—त्रिताल व दादरा तालों का ठेका, बोल, मात्रा सहित हाथ से ताली देकर अभ्यास करवाया जाय।

कक्षा—४

गायन—

(क) शास्त्रीय संगीत—काफी, भैरव, आसावरी, भैरवी इन रागों में एक-एक सरगम तथा एक-एक गान सिखाया जाना चाहिये। इन्ही रागों पर कुछ पलटे भी सिखाये जांय।

(ख) राष्ट्र गीत—एक

(ग) साधारण गीत—इनकी संख्या अधिक से अधिक तीन हो। भजन आदि गीतों का इसी में समावेश होगा।

नोट—इस कक्षा में छात्रा को शुद्ध स्वरों का उत्तम ज्ञान होना आवश्यक है।

(घ) ताल—एकताल और झपताल का ठेका, बोल, मात्रा सहित हाथ से ताली देकर अभ्यास करवाया जाय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रथमवर्ग

गायन

(क) शास्त्रीय संगीत—

राग—यमन कल्याण, अल्हैया बिलावल।

इनमें एक एक सरगम तथा एक एक छोटा ख्याल अलाप तानों सहित सिखाना चाहिए।

(ख) राष्ट्रगीत—दो।

(ग) अन्यगीत-दो (इसमें भजनों का समावेश रहें)।

(घ) ताल—त्रिताल, एकताल, झपताल व दादरा।

अथवा

वादन—

(अ) शास्त्रीय संगीत-

राग—यमन कल्याण व बिलावल में एक एक मसीदखानी (विलंबित लय की) गत तान तोड़ों सहित सिखायी जाय।

(आ) ताल—गायन के पाठ्यक्रमानुसार रहेंगे।

शास्त्रीय ज्ञान :—

संगीत की परिभाषा, भारत की संगीत पद्धतियाँ नाद की परिभाषा, नाद का छोटा बड़ा पन, नादकी जाति अथवा गुण, नाद की उच्चनीचता, स्वर, सप्तक स्थान, सप्तक के बारह स्वर, थाट, अभ्यास क्रम के रागों का वर्णन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

द्वितीय वर्ग

गायन—

(क) शास्त्रीय सङ्गीतः—भूपाली, खमाज, व आसावरी राग इन रागों में एक एक सरगम तथा एक एक छोटा ख्याल अलाप तानों सहित सिखाना चाहिए।

(ख) राष्ट्रगीत—दो

(ग) अन्यगीत—दो (इसमें भजनों का समावेश रहे)।

(घ) ताल—प्रथम वर्ग के पाठ्यक्रम के अतिरिक्त चौताल।

अथवा

वादन

(अ) भूपाली, खमाज व आसावरी रागों में एक एक मसीद खानी गत तानों सहित।

(आ) राग-यमन कल्याण के अलाप।

(इ) ताल-गायन के पाठ्यक्रमानुसार।

शास्त्रीय ज्ञानः—

प्रथम वर्ग के पाठ्यक्रम के अतिरिक्त राग, रागों के तीन भेद। वर्ण, अलंकार, वादी, संवादी अनुवादी, विवादी की परिभाषा। स्वरमालिका लक्षणगीत, ध्रुपद, धमार के वर्णन। गीत अवयवस्थाई, अतरा, संचारी आभोग। वक्रस्वर, पकड़, मात्रा लय की व्याख्यायें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तृतीय वर्ग

गायन

(क) शास्त्रीय संगीत—काफी, सारंग, भैरवी रागोंमें एक एक सरगम तथा एक एक छोटा ख्याल अलाप तानों सहित अथवा ध्रुपद (ध्रुपद में दुगुन करना आवश्यक है)

(ख) राष्ट्रगीत :—दो

(ग) अन्यगीतः—दो (इसमें भजनों का समावेश रहे)

(घ) तालः—पिछले वर्गों के अभ्यासक्रम के अतिरिक्त तिलवाडा व धमार तालों के ठेके बोल मात्रा सहित ।

अथवा

वादन

(अ) रागः—काफी, सारंग व भैरवी रागों में एक एक रजारवानी तथा एक एक मसीदरवानी गत तान तोड़ों सहित ।

(आ) राग–भूपाली व भैरवी के अलाप ।

(इ) तालः–गायन के अभ्यास क्रमानुसार ।

शास्त्रीय ज्ञानः–पिछले वर्गों के अभ्यासक्रम के अतिरिक्त आश्रयराग व गायकों के गुण अवगुण ।

संस्कृता

गायन

(अ) शास्त्रीय संगीतः—बिहाग, व भैरव रागों में एक एक सरगम तथा एक एक छोटा ख्याल अलाप तानों सहित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अथवा ध्रुपद या धमार (ध्रुपद, धमार में दुगुन व चौगुन आवश्यक है)

(आ) राष्ट्रगीत :—दो ।

(इ) अन्यगीत—दो (इसमें भजन का समावेश रहे)

(ई) ताल —पिछले सब की आवृत्ति

अथवा

वादन—

(अ) राग—देश, बिहाग, व भैरव रागों में एक एक रजाखानी व एक एक मसीदखानी गत तान तोडों सहित ।

(आ) राग— भैरव के अलाप ।

(इ) ताल—गायन के पाठ्यक्रमानुसार ।

शास्त्रीयज्ञान—पिछले वर्गों के अभ्यास क्रमकी आवृत्ति तथा संधि प्रकाशराग प्रकरण ।

चित्रकला की शिक्षा के उद्देश्य

कक्षा १

१—सृजन शक्ति का विकास ।

२—दृष्टि की साधना, सुगमता के रूप—रंग का ज्ञान और वास्तविकता और यथार्थ की पहचान ।

३—मानसिक शक्तियों का विकास करना और उन शक्तियों का उपयोग करने में समर्थ बनाना ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४–सौंदर्य का ज्ञान बढ़ाना और उसकी सराहना करने की योग्यता उत्पन्न करना।

५–सत् कला की आधारभूत बातों का ज्ञान और अभ्यास करना, जिससे जीवन में सरलता तथा सुन्दरता का समावेश हो।

६–अपने मनोभावों और विचारों को सरल सुन्दर तथा स्वाभाविक रीति से व्यक्त कर सकना।

७–स्वावलम्बन आ सके।

उपर्युक्त उद्देश्यों पर हमारी कला शिक्षा आश्रित है, ये ही कला के मूलभूत सूत्र हमने माने हैं। छात्राओं के कार्य पर, उनकी सृष्टि तथा अङ्कन–वस्तु पर ही अध्यापक को जड़रूप होकर विशेष ध्यान देने की इतनी आवश्यकता नहीं है, जितनी कि उसे छात्राओं के नैसर्गिक विकास पर जागरुक प्रहरी की भांति ध्यान रखने की तथा उनकी सृष्टि को अपनी सहानुभूति पूर्ण अन्तर्द ष्टि से अवलोकन करने की। सफल शिक्षक का कर्त्तव्य है कि वह प्रत्येक छात्रा की व्यक्तिगत भावनाओं तथा अनुभूतियों को विकास देने का प्रयत्न करे। छात्राओं को मूक तथा जड़ न बनने दे, तथा इनमें लगातार सुरुचि और सफल चित्रण के लिये प्रेरणा भरता रहे।

कक्षा १

(१) कल्पना चित्रण :—

कल्पना को व्यक्त करने पर विशेष ध्यान दिया जाये। प्रत्येक छात्रा की अनुभूतिगत कल्पना को ही व्यक्त कराया जाये। शिक्षक अपनी कल्पना तथा विचारों से बच्चों की मौलिकता नष्ट न करें।

(२) स्मृति चित्रण:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्मृति से सरल वस्तुओं के रूप अङ्कित करना, जैसे पत्ते, फल-फूल और साधारण वस्तुएँ, जिनको छात्राएँ रात-दिन देखती रहती हैं।

(३) रंग-ज्ञान :

नीले, पीले और लाल रंगों का ज्ञान तथा वस्तुओं में इनकी पहचान। अङ्कित आकृतियों में अपने रंग-ज्ञान के आधार पर केवल इन्हीं तीन रंगों को अदल-बदल कर भरना।

(४) छाया-चित्रण :

सरल आकृतिवाली वस्तुओं की छाया डालकर छायारूप को रेखाबद्ध करना।

(५) विशेष

बैठने तथा पेंसिल और तूलिका पकड़ने का सही तरीका बतलाकर कलाई और भुजाओं को सरलता से चलाने का अभ्यास अच्छी तरह कराना चाहिए। शिक्षक को इन बातों पर पूरा-पूरा ध्यान देना चाहिए जिससे उनकी आदत इस प्रकार पड़ जाये।

कक्षा २

(१) कल्पना-चित्रण

कक्षा १ के समान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्मृति से पत्तों की टहनियाँ, फूलों के गुच्छे, छोटे फल, पक्षी तथा निर्जीव वस्तुओं का अंकन।

(३) आलङ्कारिक चित्रण (Design)

अङ्कित आकृति तथा रूपों को भिन्न-भिन्न प्रकार से दोहरा कर अलङ्कार-चित्र अङ्कित करना। शिक्षक को संयोजन की दृष्टि से छात्राओं के कार्य में गुण-दोष बतलाना चाहिए।

(४) रंग-ज्ञान :

लाल, पीले, और नीले रंगों के मेल से बैंगनी, नारंगी और हरा रंग बनाना इन रंगों को आसपास की वस्तुओं में पहचानना और बनाई हुई आकृतियों में इन रंगों को भरना।

(५) छाया-चित्रण :

पिछली कक्षा की ही भाँति परन्तु कुछ कठिनरूप अङ्कित करवाये जायें, जिससे अंगुलियाँ अच्छी तरह घूम सकें।

(६) विशेष :

पिछली कक्षा के समान। सीधे आसन से बैठकर कार्य करने की आदत डाली जाये। चित्रकला में सफाई तथा स्वच्छता का महत्व बतलाया जाये और उनको उसी प्रकार रहने के लिए शिक्षा दी जाये।

कक्षा ३

(१) कल्पना-चित्रण :

सरल तथा साधारण रूप बच्चों की कल्पना के अनुसार अङ्कित करवाये जांय; वस्तुओं को देखे हुए रूपों से भिन्न रूपों में अङ्कित करवाना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) स्मृति-चित्रण

दैनिक उपयोग की वस्तुओं के चित्र तथा पक्षी, तितली और पशुओं की रूप रेखा अङ्कित करना।

(३) आलङ्कारिक चित्रण (Design) :

अङ्कित रूपों को कई प्रकार से जनाकर तथा दोहरा कर किनारी और पट्टी के आलंकारिक चित्र अंङ्कित करना और रंग भरकर चित्र को पूर्ण करना।

(४) रंग-ज्ञान :

लाल, नीले, पीले, काले और सफेद रंग को मिलाकर कई प्रकार के हलके-गहरे रंग बनाना। उनके नाम जानना।

(५) छाया-चित्रण :

फूल-पत्तियों और वस्तुओं की छाया डालकर भिन्न भिन्न रंगों से आलेखन करना।

कक्षा ४

(१) कल्पना-चित्रण :

पिछली कक्षा के समान ही, आकृति-गठन पर विशेष ध्यान दिया जाये।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) स्मृति-चित्रण :

तितलियों, पशु-पक्षियों आदि को कार्य करते हुए अङ्कित करना फलों और फूलों को, उनका विकास बतलाते हुए अङ्कित करना।

(३) प्रकृति-चित्रण:

प्रकृति के प्रधान सरल रूपों तथा अङ्गों (पहाड़, जल, लहर, बादल, भूमि टीले और वृक्ष इत्यादि) का अङ्कन।

(४) आलङ्कारिक चित्रण: (Design)

पट्टी, सरल बेल, कोना तथा मध्य का आलङ्कारिक चित्र अङ्कित करना। सीखे हुए पौधों के फूल-पत्तों से ही चित्र बनाना।

(५) रंग-विज्ञान :

लाल, नीले, और पीले को मिलाकर विभिन्न प्रकार के हलके गहरे रंग बनाना। सफेद और काले रंग को मिलाकर उजले और धुंधले रंग बनाना।

(६) छाया-चित्रण :

भिन्न-भिन्न पौधों की पत्तियों तथा फूलों के विविध रूप अङ्कित करना और मूल वस्तु को देखकर चित्रित रूपों में रूपों को पूर्ण करनेवाली रेखायें डालना तथा अङ्ग विन्यास करना।

कक्षा ५

(१) कल्पना-चित्रण :

सरल बाल-कहानियों तथा घटनाओं को संकेत रूप में चित्रित करना, विचार तथा कल्पना को विकसित करनेवाले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

चित्र भी छात्राओं को दिखलाये जाँय और उन चित्रों के विषयों में उनकी निजि राय ली जाय, जिससे दृष्टि के साथ ही उनकी कल्पना भी काम करे। पशु-पक्षी तथा आकर्षक जंतु वर्ग ही इस क्षेत्र में आने चाहिए।

(२) स्मृति-चित्रण :

कोई सरल जीवाकृति दिखलाकर फिर उसका चित्र अङ्कित करवाया जाये। किसी कार्य का कई रूपों में छात्राओं को अवलोकन करवा कर फिर स्मृति द्वारा उस कार्य को चित्र रूप में व्यक्त करवाया जाये।

(३) वस्तु-चित्रण:

गोलाकार तथा चतुष्कोणाकार सरल समतल वस्तुओं का चित्रण। सरल रेखा रूप को सही ढंग से नापना। वस्तु में छाया प्रकाश (Light & Shade) का ज्ञान होना और चित्र में छाया (Shade) अङ्कित करना।

(४) प्रकृति-चित्रण :

फूल और पत्तों को भिन्न-भिन्न अवस्थाओं में रंग से बनाना।

(५) आलंकारिक चित्रण (Design)

किसी प्रयोजन के लिये किन्हीं आकृतियों के संयोजन से सरल आलंकारिक चित्र बनाना। कसीदे के काम में आने वाले सरल चित्र अङ्कित करना, अल्पना और साँझी (Stencil) अङ्कित करना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६) ज्यामितिक-चित्रण

बिन्दु, रेखा तथा कोणों की परिभाषायें जानना और उनके रूपों का अंकन। ज्यामितिक उपकरणों—पटरी, परकार और गुणियों (Set Squares) का उचित उपयोग जानना।

(७) रंग-विज्ञान:

शुद्ध, मिश्रित और बहुमिश्रित रंगों का पूर्ण ज्ञान, उनकी श्रेणियाँ, प्रभाव और नाम जानना। रंग-चक्र बनाना।

(८) विशेष :

किसी शुभ अवसर पर या त्यौहार पर भेंट करने के लिये मंगल-कामना-पत्र बनाना। नागरी अङ्कों और अक्षरों का पारस्परिक अनुपात और रूप का ज्ञान तथा अङ्कन।

कक्षा ६

(१) कल्पना-चित्रण :

कक्षा ५ के ही समान तथा कल्पना से कार्यरत जीव-जन्तु और मनुष्यों को अङ्कित करना और रंग भरना।

(२) स्मृति-चित्रण :

कक्षा ५ के ही समान, परन्तु रूप अधिक स्पष्ट और पूर्ण हो।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) वस्तु–चित्रण

चतुष्कोणाकार तथा गोलाकार अचल वस्तुओं को देखकर चित्र अङ्कित करना। वस्तुओं का अनुपात। स्थिति और संबन्ध तथा छाया–प्रकाश को ध्यान में रखते हुये पूर्ण चित्रण।

(४) प्रकृति–चित्रण :

फूल–पत्तों पौधों के सुन्दर अङ्गों का चित्रण। छाया–प्रकाश तथा रंग–संकेत करना आवश्यक है।

(५) आलंकारिक चित्रण (Design)

प्रकृति से अध्ययन किये हुये पौधों के सुन्दर अङ्गों का वेल-बूटों के रूप में विभिन्न प्रकार से संयोजन करके आलं-कारिक चित्र-रचना करना। इन चित्रों को कई रंगों में अथवा एक रंग या पेंसिल से छाया–प्रकाश देकर पूर्ण करना। नागरि अक्षरों को रंजितरूप में रचना करना।

ज्यामितिक–चित्रण :

त्रिभुज तथा चतुर्भुजों की परिभषायें और रूप का ज्ञान तथा अङ्कन।

(७) खाके काटना और छापना :—

सांझी (Stencil) के लिए खाके काटना और सांझी अङ्कित करना तथा खाके से चित्र छापना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(८. रंग-विज्ञान :

रंग और छाया-प्रकाश, गरम और ठंडे रंग अर्थात् आगे पीछे हटने वाले रंग। रंग-संयोजन और सौंदर्य, रंग और प्रकृति, इन्द्रधनुष का चित्रण तथा उसमें रंगों का अनुपात और मिश्रण का अध्ययन।

कक्षा ८

इन कक्षाओं में छात्राओं को सभी प्रकार की तथा सभी काल की उत्तम कला कृतियों के अवलोकन का तथा अध्ययन का अवसर दिया जाये। यथार्थ और आदर्श रूप का ज्ञान भली भांति करा दिया जाये। छात्राओं के कार्य में उनकी रुचि तथा व्यक्तित्व व्यक्त हो, इसका ध्यान रहे तथा उनके लिए उसी प्रकार के कार्य की व्यवस्था संतोष प्रद रूप से रहे।

कक्षा 'संस्कृता' (८) पर हमारी पहली मंजिल समाप्त होती है। न मालूम आगे की मंजिल में कौन छात्रा किस दिशा की ओर अग्रसर हो? अतः हमें यह आशा और विश्वास नहीं है कि केवल प्रकृति से प्राप्त कला-प्रतिभा वाली छात्राओं के अतिरिक्त प्रत्येक छात्रा कलाकार बने। अतः शिक्षक को चाहिये कि छात्राओं में आदर्श कला के प्रति सद्भावना तथा सुरुचि उत्पन्न करे। भारत की उत्तम प्रान्तीय तथा जातीय कला-कृतियों के बारे में उन्हें जानकारी हो, उनकी परम्परा की विशेषताओं और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भावनाओं को समझाया जाय। इस से वे भावी जीवन में सत्कला में रस ले सकें, सत्कार कर सकें, परिवार तथा समाज में कला को प्रोत्साहन दे सकें और निम्न कोटि की कला से बच सकें।

कक्षा ७

(१) कल्पना-चित्रण :

अपनी कल्पना से प्राणी-चित्र, दृश्य-चित्र, अथवा घटना चित्र अङ्कित करना और उसे रंगों में पूर्ण करना।

(२) प्रकृति-चित्रण :—

दृश्यांकन तथा दृष्टिगत रूपों का सरल रेखांकन। दृश्यांकन के लिये छात्राओं को बाहर ले जाना चाहिए!

(३) वस्तु-चित्रण :

अचल वस्तुओं को देख कर रेखांकन करना और छाया-प्रकाश दिखा कर पूर्ण करना। दृष्टिक्रम (Perspective) के नियम जानना। किसी चित्र या रूप को छोटा अथवा बड़ा बनाना।

(४) अलंकरण (मंडन-शिल्प):

भावगत आलंकारिक सृष्टि करना। रचना के अंग प्राकृतिक और सुन्दर-गठित रूप के रहेंगे। विभिन्न प्रकार की बेलें: बन्दनवार, चौक और आल्पना की रचना। नागरी अङ्कों और अक्षरों की रचना और चित्र रूप में संयोजन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) खाके काटना और छापना (Stencil)

खाके काटकर उन्हें विभिन्न रंगों में छापना।

(६) ज्यामितिक चित्रण :

वृत्त तथा बहुभुज क्षेत्रों के रूपों का ज्ञान और अङ्कन।

(७) रंग-विज्ञान :

एक रंग का दूसरे रंग पर प्रभाव, ओज और माधुर्य, मानव-प्रकृति और रंग, समपूरक और अनुपूरक रंग। रंगों का अनुपात और पारस्परिक मेल।

(८) भारतीय कला का इतिहास :

भारतीय चित्रकला के विकास का प्रारम्भिक इतिहास। हिन्दू काल और उसके अन्तर्गत प्रधान शैलियों तथा प्रसिद्ध-प्रसिद्ध कला स्थानों का परिचय।

"संस्कृताः" कक्षा ८

(१) कल्पना-चित्रण :

अपनी कल्पना से विभिन्न आकृतियाँ, प्राणी-समूह, दृश्य इत्यादि अङ्कित करना तथा किसी भाव को चित्रित करना।

(२) प्रकृति-चित्रण :

एक रंग, पेंसिल अथवा अधिक रंगों में दृश्यांकन। दृश्यांकन के लिए छात्राओं को बाहर लेजाना चाहिए। उन्हें प्रकृति, मौसम और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

काल का ज्ञान हो और वैसे वातावरण की चित्र में सृष्टि कर सकें, इसलिए उपयुक्त अवसरों पर प्रकृति-चित्रण अवश्य करवाया जाय।

(३) वस्तु-चित्रण :

सामने रखी हुई वस्तुओं का चित्र अङ्कित करना। स्थिति और अनुपात के अनुसार सही अंकन। दृष्टिक्रम (Perspective) के नियम जानना। सब रंग काम में लाये जा सकते हैं।

(४) अलङ्करण (मण्डन-शिल्प) :

विविध श्रेणी और रूप के मण्डन-शिल्प की सृष्टि करना। रूप, छाया-प्रकाश और रङ्गों के संयोजन द्वारा उनको पूर्ण करना नागरी और रोमन वर्ण-माला के अङ्कों-अक्षरों की रचना और चित्र में उनका संयोजन करना।

(५) संयोजन :

दृश्य, मानव, प्राणी और वस्तुओं का संयोजन।

(६) ज्यामितिक चित्रण :

विभिन्न बहुभुज क्षेत्रों का ज्ञान और अंकन। सरल मापक (Plain scale) अङ्कित करना और उसका उपयोग।

(७) रङ्ग-विज्ञान :

रङ्गों का संयोजन, पारस्परिक मेल (Colour Harmony) और रङ्ग तैय्यार करना (Colour-mixing) तथा रङ्गों के अनुपात का ज्ञान।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(८) विशेष :

जाली इत्यादि की रचना। दीवार पर रेखाङ्कन करना और रङ्ग लगाना। आल्पना करना (छात्राएँ रङ्ग स्वयं तय्यार करें) मङ्गल-कामना-पत्र बनाना। किसी उत्सव अथवा मङ्गल कार्य के अवसर पर सजावट और अलङ्करण का कार्य करना।

(९) भारतीय कला का इतिहास :

भारतीय कला की प्रधान शैलियों का संक्षिप्त ज्ञान। उनकी परम्परा तथा भावनाओं का उस काल की दृष्टि से ज्ञान। भारतीय कला-जगत में नवजागरण के इतिहास का परिचय और प्रतिनिधि आधुनिक काल के कलाकारों—विशेष रूप से स्त्री कलाकारों-के बारे में जानकारी होनी चाहिए।

अजन्ता के कला मण्डपों का पूर्ण अध्ययन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पुस्तकीय शिक्षा

कक्षा १

१:–हिन्दी

भाषा शिक्षा के निम्नलिखित अङ्क होंगे।

(क) मौखिक अभ्यास

(अ) (वार्तालाप संलाप)— बच्चे मनुष्य-शरीर के भिन्न-भिन्न अङ्गों, अपने कपड़ों, कक्षा के कामों और वस्तुओं के अतिरिक्त दैनिक जीवन में प्रयुक्त वस्तुओं, क्रियाओं, घटनाओं और चित्रों के विषय में सरल संलाप कर सकें।

(आ) कथा कहानियाँ– निम्न लिखित विषय की कहानियाँ सुनें, समझें, और कह सकें—

(१) पौराणिक कथायें (२) लोककथायें (३) प्रकृति-विषयक कथायें (४) पशुजीवन की कथायें (५) भिन्न–भिन्न देशों के जीवन की कहानियाँ (६) आदिमानव के प्राचीन-कालीन जीवन की कहानियाँ (७) शाला–जीवन तथा परिवार जीवन की कहानियां।

(४) (५) तथा (६) सामाजिक विज्ञान (इतिहास) में भी रहेंगे

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(इ) कविता-पाठ— सरल कविताओं का भावात्मक पाठ।

(ई) अभिनय— सभी समझी हुई कहानियों का अभिनय

(ख) अध्ययन

अक्षरारम्भ से ६ मास तक लिखना सिखाने की आवश्यकता नहीं है। इन ६ महीनों में मौखिक शिक्षा होगी और उसी के द्वारा छात्रों में लिखने की उत्सुकता उत्पन्न करनी होगी।

(१) अक्षर-ज्ञान में इस बात का ध्यान रक्खा जाय कि सरल आकृतियों के अक्षर पहले और जटिल तथा जटिलतर पीछे सिखाये जायें।

(२) आकार में समानता वाले अक्षर साथ-साथ सिखायें जावें, जिससे उनका पारस्परिक भेद स्पष्ट हो, जैसे।

(क) ग म भ झ

(ख) र स ख ए श

(ग) प फ अ ण ष य थ

(घ) व ब च क ज न त्र

(ङ) त ल

(च) ट ठ ढ द घ ध छ ह इ उ ह ङ ह

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ग) लेखन

(अ) अनुलेख—पढ़े हुए शब्दों और वाक्यों को अपनी पट्टी पर सरकण्डे की क़लम और खड़िया स्याही से शुद्ध प्रतिलिपि।

(आ) सुलेख—

(१) अनुलेखों में अक्षरों की बनावट में सुन्दरता पर पूरा पूरा ध्यान दिया जाय। शिक्षक स्वयं अपने हाथ से क़लम के मोड़ों द्वारा छात्रों का अक्षर की शुद्ध आकृति हृदयङ्गम करावें। इस दिशा में कार्ड बोर्ड लकड़ी या प्लाईवुड़ के सुन्दर कटे हुए अक्षरों से अच्छी सहायता ली जा सकती है

तीन अक्षरों तक के असंयुक्त सरल शब्दों और उनसे बने हुये सरल वाक्यों का शुद्ध उच्चारण से पाठ।

२: गणित

अङ्कगणित

(प्रथम अर्द्धवर्ष)

(१) वस्तुओं से १०० तक गिनती गिनना और ज्ञान कराना कि गिनती १० के विभागों में बँटी हुई है।

(२) दस-दस पाँच पाँच और दो-दो करके १०० तक गिनना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) (+,-) जोड़-बाकी के चिन्हों का ज्ञान

(५) तोला व वजनों का ज्ञान। फुट, गज और तार का परिचय, रुपया व उससे छोटे हिस्सों का ज्ञान।

सूचनाः गिनती में रुचिकर खेल खिलाये जायँ। मौखिक गणित पर जोर दिया जाय।

रेखागणित

रेखागणित की सरल आकृतियों (सरल रेखा, टेढ़ी रेखा आदि) का ज्ञान

३: सामाजिक विज्ञान

(क) इतिहास

१, पृथ्वी की कथाः पृथ्वी का जन्म.. प्राचीन काल के कुछ प्रसिद्ध, जीव, जो अब नहीं मिलते; आदी-मानव।

२, आदि-मानव की कहानीः आदि मानव अपनी आवश्यकताओं को कैसे पूरा करते थे और उन्होंने सभ्य जीवन के निम्नलिखित संस्कार कैसे बढ़ाये ?

(i) उनका निवास, गुफा, वृक्ष, लकड़ी आदि के मकान।

(ii) उनके वस्त्र या प्राकृतिक रचा, पत्तियों, छालों आदि से शुरु होकर धीरे-धीरे ऊनी, सूती और रेशमी कपड़ों का विकास।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आरम्भिक रूप में कृषि।

(iv) उनके हथियार और औजार, लकड़ी, पत्थर, कसकुट और लोहे का प्रयोग।

(v) उनकी आत्माभिव्यक्ति के साधन–बोल-चाल, आदि लेखन और चित्रण।

(vi) उनके साथी और सहायक—घोड़ा, कुत्ता, गाय आदि।

३ वर्तमान काल में आदिम जीवन–अफ्रीका का मूल निवासी आस्ट्रेलिया के बुशमैन–सीलान के वेद और हिन्दुस्तान के संताल, भील, गोंड आदि।

४ सभ्यता का जन्मस्थान–कृषि और पशुपालन का प्रारम्भ– नदियों की तटभूमि वाले देश (मिश्र, चीन, भारत, मेसोपोटामियाँ आदि)

(ख) भूगोल

भूगोल की शिक्षा निरीक्षण और प्रत्यक्ष अनुभव से आरंभ होगी।

निम्नलिखित वस्तुओं का यथासंभव प्रत्यक्ष ज्ञान कराना और इनके संबन्ध में कुछ मोटी मोटी बातें बतलाना चाहिए प्रत्यक्ष ज्ञान के अभाव में चित्र, मानचित्र या छोटे मॉडलों का उपयोग हो सकता है।

(१) आकाश परिचय :–सूर्य, तारे पृथ्वी और चन्द्रमा का परिचय :

(२) पृथ्वी–परिचयः

प्राकृतिक पदार्थ—पहाड़ी, पहाड़, नदी, झरने, सोते, झील और समुद्र का परिचय,

कृत्रिम पदाथ :—कुआ, बावड़ी तालाव, बन्ध नहर, खेत और बाग-बगीचे का परिचय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) नैसर्गिक दृश्य और व्यापार:–(Natural Phenomena दिन, रात, ऋतुयें, (सर्दी, गर्मी, वर्षा) हवा, आँधी, वृष्टि और इन्द्रधनुष की पहिचान।

(४) देश-परिचय:– (ग्लोब की सहायता से) भूमण्डल के जल और स्थल विभाग – महाद्वीपों और महासागरों के नामों का ज्ञान।

(ग) सरल नागरिक शास्त्र

१–नागरिक जीवन

(अ) शाला-जीवनआशा— की जाती है कि शिक्षक अपने आचार द्वारा कक्षा और खेल के मैदान में छात्राओं का पथ प्रदर्शन करेंगे कि उनमें समुचित सामाजिक और नागरिक व्यवहार विकसित हों जैसे:– पारस्पारिक व्यवहार, आदर और सहानुभूति कक्षा, विद्यालय और उसके पडौस की स्वच्छता। इस शिक्षण-कार्य में सामाजिक, धार्मिक और राष्ट्रीय समारोहों से पर्याप्त सहायता मिलेगी।

(आ) गृह–जीवन—बालक को यह ज्ञान कराने का प्रयत्न होना चाहिये कि घर की एक व्यवस्थित संस्था या समाज के रूप में महत्ता है, और उसमें गुरुजनों, बराबरवालों और छोटों के प्रति समुचित व्यवहार करने की रुचि उत्पन्न करनी चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

विशेष : यह सब काम व्यावहारिक अर्थात् प्रायोगिक रूप से होगा ।

४ : गृह-विज्ञान

स्वास्थ्य रक्षा—

इस कक्षा में स्वास्थ्य रक्षा (Hygiene) की शिक्षा प्रायोगिक (Practial) रूप से होगी। अध्यापकों को इस बात की देख-भाल रखनी होगी कि बच्चों के कपड़े, शरीर, बाल, नाखून, दाँत, नाक, कान, और आँख स्वच्छ रहे। बालों में लीख नही होने पावें नाखून न बढने पावें और बच्चों में दाँतों से नाखून काटने की आदत न पड़े। बच्चों की आँखों पर समुचित ध्यान रहे और यह मालूम होने पर की उन की आँख की रोशनी में कुछ खराबी है, जाँच कराकर चश्में कि व्यवस्था हो। उनके पीने के लिए शुद्ध और स्वच्छ जल की व्यवस्था हो।

शिक्षा के कमरे को साफ और हवादार रखा जाय। उसकी सफाई में छात्राओं से सहायता ली जावे। स्वयम् अध्यापक को अपने ढंग और रहन-सहन से स्वास्थ्यरक्षा के सिद्धान्तों का आदर्श बनना चाहिये। स्वास्थ्य सम्बन्धी आदतें डालने के सम्बन्ध में यह ध्यान रहे कि प्रत्येक वस्तु को क्रम से और स्वच्छता तथा सुन्दरता से सजाकर रखने की वृत्ति बच्चों में बने। पाठशाला आते समय वे साफ सुथरे रहें उन्हें आदेश देना चाहिये कि वे अपनी पुस्तकें और दूसरी चीजें ढ़ंग व सफाई से रखें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा १

५ साधारण विज्ञान

(क) जीव-ज्ञान—गाय, बिल्ली, कुत्ता, चूहा, कौआ मोर के बारे में जानकारी; उनकी आदतें; बदन के बनावट की खास खास बातें।

(ख) वनस्पति-ज्ञान—पेड़ और पौधे में फर्क, नीम, पीपल, आम, बबूल, बड़ का उदाहरण देकर कुछ पेड़ों के नाम बतलाना, इसी तरह मूली, गाजर, लौकी, तुरई आदि प्रमुख शाक आसपास के भाजियों से परिचय कराना। कुछ फूलों से परिचय कराना।

(ग) प्रकृति-ज्ञान—३ मुख्य ऋतुएँ। सप्ताह के ७ दिन के नामों को बतलाना। १२ महीनों को बतलाना। उजेले और अँधेरे पक्ष को समझाना।

(घ) भौतिक-ज्ञान—तीन तरह के पदार्थ: ठोस, द्रव और गैस में पहिचान। खुशबू और बदबू का ज्ञान। तीन प्रमुख (लाल, पीला नीला) रंगोंका ज्ञान। चिकना, खुरदरा आदि का ज्ञान।

(ङ) रसायन-ज्ञान—मीठा, खट्टा, नमकीन स्वादों का ज्ञान कराना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा २

हिन्दी

भाषा-शिक्षा के निम्नलिखित अंग होंगे:—

(क) मौखिक अभ्यास

(अ) वार्तालाप (संलाप)-इस कक्षा में बालक या बालिका का शब्द-कोश बढ़ाने का प्रयत्न होना चाहिए। गणित तथा सामान्य ज्ञान में जो शब्द वे सीखें उन्हें दुहराना और उनका स्वयं प्रयोग करना उन्हें आना चाहिए।

(आ) कथा-कहानियाँ—पिछली कक्षा के अनुसार।

(इ) कविता-पाठ—अपनी पाठ्यपुस्तक, मासिक पत्रों तथा अन्य बाल-पोथियों की सरल कविताओं का भावात्मक पाठ।

(ई) अभिनय—सुनी-समझी हुई कहानियों और कविताओं का अभिनय।

(उ) वर्णन—बच्चे अपने गाँव तथा नगर की विविध वस्तुओं, दृश्यों, घटनाओं या व्यापारों, उत्सवों, समारोहों आदि के विषय में कह सकें।

(ख) वाचन और अध्ययन

पाठ्यपुस्तक में निम्नलिखित विषयों पर सरल पाठ हों—

गद्य

(अ) प्रकृति जीवन (आ) बालक की घरेलू परिस्थिति, पाठशाला तथा गाँव (इ) स्वास्थ्य (ई) खेती और दूसरे उद्योग (उ) त्यौहार-उत्सव (ऊ) पौराणिक अथवा लोक-प्रचलित

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कहानियाँ (रामायण, महाभारत, पुराण, कथासरित्सागर से
(ए) अन्य देशों के बाल-जीवन की कहानियाँ।

पद्य

कथात्मक और सरल बालोपयोगी कविताएँ।

छात्रों को पाठों में आये हुए शब्दों का अर्थ और उन
मौखिक मौलिक प्रयोग आना चाहिये।

(ग) लेखन

(अ) श्रुतिलेख—संयुक्त शब्दों और उनसे बने हुए वाक
को सुनकर लिख सकें।

(आ) सुलेख—पाठ्य पुस्तक या श्यामपट देख-देख
अपनी पट्टी पर शुद्ध और सुन्दर अक्षरों में गद्य या पद्य वा
लिखना चाहिए। लेखन का सब अभ्यास कलम से
होना चाहिए।

२: गणित

अंकगणित

(१) ९९९ तक गिनना और लिखना।

(२) २० तक जोड़-बाकी (मौखिक)। खड़े व आड़े ख
में २ और ३ अंकों की संख्याओं का जोड़ (योग ९९९ से अ
न हो)।

(३) किन्हीं २ व ३ अंकों की संख्याएँ घटाना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) तीन-तीन, चार-चार और छः-छः करके १०० तक गिनना (मौखिक)।

(५) १०×१० तक का मौखिक गुणा; १० तक पहाड़े।

(६) सरल गुणा (फल ९९९ से अधिक न हो)।

(७) ३ अंकों तक की संख्या में ९ तक की संख्या से भाग, (गुणा व भाग के चिन्हों × ÷ का ज्ञान)

(८) लंबाई नापने और तौल करने का अभ्यास।

(९) सिक्कों (रुपया, आना, पैसा, पाई) वजन (पंसेरी, सेर, छटाँक, व तोला और अन्नी) और लंबाई (गज, फुट व इंच) के नापों का ज्ञान।

(१०) गुंडी (लट्टी), कली व तार का ज्ञान।

रेखागणित

सरल आकृतियाँ—वर्ग, चतुर्भुज, त्रिभुज और वृत्त की पहचान

३ सामाजिक विज्ञान

(क) इतिहास

१—प्राचीन कालीन जीवन—निम्नलिखित प्राचीन सभ्यताओं का ज्ञान सरल, कल्पित व ऐतिहासिक कहानियों के रूप में विद्यार्थियों को कराना चाहिए।

(i)—बेबिलन—नहरों तथा पम्पों द्वारा सिंचाई, लेखन-प्रणाली की उत्पत्ति; मिट्टी की लिखने की पट्टियाँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा २)

(ii) **मोहिन जो दड़ो**–व्यापार व खेती ईटें बनाना, नालियाँ व स्नानघर, पशुओं का प्रयोग, कपड़ा बुनना, मिट्टी की मुहरें।

(iii) **मिश्र**–कृषि, कताई–बुनाई, पिरामिड।

(iv) **वैदिक भारत**–घुड़सवारी, विभिन्न वर्ग और उनके मुखिया, अङ्कगणित, प्रकृति–पूजा।

(v) **फिनीशियन लोग**–सामुद्रिक यात्राएँ, व्यापार, साहसी कार्य, लिपि का आविष्कार।

(vi) **यूनानी**–स्वतन्त्र नागरिक, यूनानी दास, व्यायाम व, खेलों में रुचि, ओलिम्पिक प्रतियोगिता।

(vii) **रोम**–रोम के कानून, नगरों, सड़कों, घरों आदि का निर्माण।

(viii) **यहूदी**–एकेश्वरवाद।

२–प्राचीन व अर्वाचीन प्रमुख आविष्कार और अनुसंधान–

(i) सुमेरियनों द्वारा—सिंचाई, लिपि।
(ii) भारतीयों ,, —संख्या व अङ्कगणित।
(iii) चीनियों ,, —रेशम, बारूद, कुतुबनुमा।
(iv) यूनानियों ,, —गृह-निर्माण; मूर्ति-कला।
(v) रोम-निवासियों ,, —सड़कें, नालियाँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(vi) जर्मनों द्वारा—छापे की मशीन, वायु-यान।
(vii) अंग्रेजों ,, —भाप की शक्ति।
(viii) इटैलियनों ,, —बेतार की तारवर्की।
(ix) अमरीकियों,, —विद्युत्-शक्ति।

(ख) भूगोल

पिछली कक्षा ज्ञान के अतिरिक्त निम्नलिखित बातों की यथासंभव प्रत्यक्ष जानकारी करना और इनके संबन्ध में कुछ मोटी-मोटी बातें बतलाना—

(१) आकाश-परिचय : ध्रुवतारा, सप्तर्षिमण्डल, आकाशगंगा और उल्का की पहिचान।

(२) पृथ्वी-परिचय :

प्राकृतिक पदार्थ :—पठार, मैदान, नदी का उद्गम व प्रवाह, नदीतल, नदीतट, कगार, सहायक नदियाँ, संगम, डेल्टा, शाखा-नदियाँ, मुहाना और जंगल।

विशेष:—ऊपर लिखी हुई बातों का परिचय प्रत्यक्ष ज्ञान के अभाव माँडल तथा मानचित्र से भी कराया जा सकता है।

कृत्रिम पदार्थः—गाँव, कस्बा, नगर (शहर) पगडंडी, रेल सड़क आदि स्थल मार्ग, जल मार्ग तथा वायु-मार्ग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा २)

(३) नैसर्गिक दृश्य तथा व्यापार — (Natural phenomena) ओस, कुहरा धुन्धु, बादल. पाला, तुषार, ओले, वर्षा, मेघगर्जना और बिजली का परिचय (प्र — ज्ञान)।

(४) देश–परिचय–(ग्लोब तथा मानचित्र द्वारा) महादेशों के मुख्य–मुख्य देशों का परिचय (स्थिति ज्ञान)—भारत, चीन, जापान, फारस, अरब, इंगलैण्ड, जर्मनी, फ्रांस इटली, यूनान, मिश्र और संयुक्त अमेरिका।

(५) भौगोलिक कहानियाँ —निम्नलिखित लोगों के विषय में इनके रहन,-सहन, खान,-पान, और वेशभूषा की परिचायक कहानियाँ बतलाना —ध्रुव प्रदेश के एस्किमो विषुवत् प्रदेश के बौने, अफ्रीका के हब्शी, सहारा के बद्दू और तिब्बत के लोग।

(६) चारों दिशाओं का बोध।

(ग) सरल नागरिक शास्त्र

(१- नागरिक– जीवन

कक्षा (१) के काम को आगे बढ़ाकर, उसे पड़ौस और गाँव में घटित किया जाय।

यह सब काम व्यावहारिक या प्रायोगिक रूप से होगा।

४ गृहविज्ञान स्वास्थ्य रक्षा

पहली कक्षा की भाँति प्रायोगिक (Practical) रूप से स्वास्थ्य-रक्षा की शिक्षा देने के साथ ही साथ तत्सम्बन्धी कुछ मोटी-मोटी बातें भी बताना चाहिए। जैसे:—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा २]

(क) शरीर की स्वच्छता—मैले-कुचेले रहने से हानियाँ—दुर्गन्ध आना, गन्दगी किसी को अच्छी नहीं लगती - मैले हाथों से न खाना और न कोई खाने की चीज छूना।

(ख) बालों की सँभाल—रोज कंघी करना, तेल डालना, समय पर धोना, लीख और जूँ से बचना, बढ़ने न देना, साफ रखना, दाँतों से न काटना।

(ग) दाँतों की सफाई—सुबह मंजन करना, खाने के बाद अच्छी तरह कुल्ला करना, दतौन, पिन, लकड़ी आदि से कुरेदने से हानि कारक परिणाम।

(घ) स्नान—प्रति दिन एक बार अवश्य नहाना मुँह, हाथ, पाँव जरूरत के अनुसार कई बार धोते रहना, ठंड में उनपर मैल न जमने पावे। नहाने से पहले तेल की मालिश।

(ङ) आँख और कान की सफाई—आँखों को ठण्डे पानी से छींटे देकर धोना, कानों में तेल डालना, शरीर की भीतरी सफाई, नियमित समय पर प्रति दिन शौच जाना, सोने से पहले और उठने के बाद सुबह एक गिलास पानी पीना लाभदायक होता है। साँस लेना, नाक से साँस लेना, लम्बी साँस लेना अच्छा है। नाक की सफाई।

(५) साधारण ज्ञान

(क) जीव—विज्ञान—बैल, घोड़ा, हाथी, बन्दर, गिलहरी, मक्खी,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा ३)

मच्छर, चींटी मेंढ़क, चिड़ियां पंडुखी बगुला तोता के बारे में जानकारी। उनकी आदतें और बदन की बनावट की खास खास बातें।

(ख) वनस्पति-ज्ञान-वृक्षों के मुख्य भाग और उनके साधारण काम आसपास के कुछ सामान्य-असामान्य वृक्षों, पौधों और सब्जियों की पहिचान। फल-फूलों का ज्ञान और गुण बतलाना।

(ग)–प्राकृति-ज्ञान–गर्मी, वर्षा, और ठंड का बनस्पति और जीव-जन्तु पर असर। छः ऋतुओं का परिचय–बारह महीनों के साथ उनका सम्बन्ध।

(घ) –भौतिक-ज्ञान–लोहा, राँगा, सीसा, ताँबा, पीतल, चाँदी और सोने की पहिचान। लाल, पीला और नीला तीन रंगों के मिश्रण से बने हुए तीन और (नारंगी, हरा, बैंगनी) रंगों का ज्ञान

(ङ)-रसायन–ज्ञान–कड़वा, चरपरा (तीका) और कसैला स्वाद का ज्ञान और भेद कराना।

कक्षा ३

हिन्दी

भाषा-शिक्षा के निम्नलिखित अङ्ग होंगे—

(क) मौखिक अभ्यास

(अ) संलाप—ग्राम, नगर, समाज और देश की बातों पर।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा ३)

(आ) कथा–कहानियाँ–पौराणिक, ऐतिहासिक या काल्पनिक।

(इ) कविता-पाठ–नीति के दोहे, सरल वर्णनात्मक प्रसंग।

(ई) अभिनय–पठित कविताओं और कहानियों का अभिनय।

(उ) वर्णन– वार्तालाप-खंड के अनुसार।

(ख) वाचन और अध्ययन।

गद्य

(अ) प्रकृति जीवन (आ) बाल–जीवन के विविध क्षेत्र (इ) स्वास्थ्य (ई) खेती तथा अन्य उद्योग (उ) सभा–समारोह और त्यौहार-उत्सव (ऊ) पौराणिक अथवा लोक–कथाएँ (ए) अन्य देशों के बाल–जीवन की कहानियाँ (ऐ) बुद्ध, ईसा, मुहम्मद जैसे महापुरुषों के जीवन की कहानियाँ।

पद्य

छात्र की क्षमता के अनुकूल सरल कविताएँ।

छात्रों में निम्नलिखित योग्यता आनी चाहिये—

(१) पाठों का शुद्ध, सस्वर और भावपूर्ण उच्चारण से पाठ।

(२) पाठों में प्रयुक्त शब्दों और वाक्यों का आशयज्ञान तथा उनका मौखिक और मौलिक प्रयोग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) स्वाध्याय के लिए सरल कविताओं का मन में पाठ।

(४) शब्द का अर्थ हृदयंगम करने के लिए विषयधि का ज्ञान।

(ग) लेखनः—निम्नलिखित लेखन-कार्य कापी पर कलम से होना चाहिए—

(अ) श्रुतिलेख— पठित पुस्तक या अन्यत्र से सुनकर वाक्य तथा अपठित कठिन शब्द लिखना।

(आ) सुलेख—पठित या अपठित पुस्तक से देख-देख कर कापी पर शुद्ध सुन्दर अक्षरों में गद्य अथवा पद्य की पंक्तियाँ लिखना।

(इ) स्वलेख—दैनिक जीवन की किसी सरल घटना, पक्षी, पशु आदि के सम्बन्ध में सरल वर्णन, पत्र या कहानी।

(ई) आलेख—निरीक्षण के अभ्यास के उद्देश्य से दिन आदि के मौसम, कार्यकलाप (routine), छोटी यात्रा का विवरण लिखना।

इस कक्षा से लेकर 'संस्कृता' कक्षा तक प्रत्येक विद्यार्थी के पास अपने हाथ की लिखी एक ग्रंथि रहेगी, जिसमें अपनी रुचि की कविता, कहानी, वर्णन तथा लेखन अङ्ग के 'स्वलेख' और 'आलेख' खंड में वर्णित वस्तु का संकलन होगा। यह संकलन कक्षा-क्रम से विद्यालय में सुरक्षित रहेगा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(घ)—कविता पाठ

कक्षा ३]

(अ) पाठ्य-पुस्तक की कविता का पुस्तक में देखकर भाव-पूर्ण ढंग से पाठ।

(आ) पाठ्य पुस्तक से कंठस्थ कविता का सस्वर पाठ।

(इ) अधूरी कविता की तुकबन्दी।

२ गणित्—

अंकगणित

(१) ७ अंकों तक की संख्याएँ गिनना और लिखना।

(२) जोड़-बाकी—(प्रतिदिन के कार्यों में जिन क्रियाओं की आवश्यकता हो उनका अभ्यास) सात-सात, आठ-आठ, नौ-नौ करके १०० तक जोड़। मौखिक जोड़-बाकी।

(३) १६ × १६ तक का गुणा (मौखिक)। २५ तक पहाड़े।

(४) लंबा गुणा (फल ७ अंकों से अधिक न हो)।

(५) तीन अंकों तक की संख्या से लम्बा भाग।

(६) ५ तक की संख्या से संक्षिप्त भाग (मौखिक)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(७) मिश्र जोड़ तथा बाकी के सरल प्रश्न।

(८) $\frac{१}{२}$, $\frac{१}{४}$, व $\frac{३}{४}$ भिन्नों का ज्ञान।

(९) वजन (तोले, छटाँक, सेर, पंसेरी, मन), लम्बाई (गज, व गिरह, तथा इंच, फुट, गज फर्लांग व मील) और समय (सेकेंड व मिनट से लेकर वर्ष तक) के पैमाने तथा इन पर आधारित जोड़-बाकी के प्रश्न।

(१०) रकम, लम्बाई, वजन और समय के नापों को छोटे में बदलना।

(११) परिमाण की पहचान और २० तक पाव, आधा व पौन का पहाड़ा।

रेखागणित

(१) कोणों की पहिचान (लघु, दीर्घ और समकोण)

(२) साधारण ठोस आकृतियों की पहिचान—बेलन का आकार, शंकु (गावदुम), गोला व घन के आकार।

महाजनी

रुपया, आना, पैसा, पाई तथा मन, सेर, छटाँक आदि को भारतीय पद्धति से लिखना और जोड़ना-घटाना अच्छी तरह आना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा २

३: सामाजिक विज्ञान

(क) इतिहास

१ प्राचीन कालीन जीवन—निम्नलिखित देशों के प्राचीन इतिहास का ज्ञान सरल ऐतिहासिक व काल्पनिक कहानियों द्वारा कक्षा को कराया जाय। शिक्षक नीचे दी हुई कथाओं का उपयोग अवश्य करें

(१) प्राचीन भारत - मोहन-जो-दड़ो के निवासी का जीवन-वृत्तान्त, किसी वैदिक ऋषि के आश्रम का कहानी के रूप में वर्णन, रामायण और महाभारत की कथाएँ, सिकन्दर और पुरु की कहानी, महावीर और जैन धर्म का परिचय, बुद्ध की कहानी और उपदेश, अशोक की कहानी—महेन्द्र और संघमित्रा की कथा, मध्य एशिया या चीन के किसी बौद्ध प्रचारक की कहानी, तक्षशिला और नालन्द के विद्यार्थी का जीवन, समुद्रगुप्त, विक्रमादित्य और कालिदास की कहानियाँ, हर्ष और राज्यश्री—हर्ष का पंचवर्षीय मेला।

(२) प्राचीन फारस— केम्बिसेस की विजय और क्रूरता क कहानियाँ, दारा के दरबार में भारतीय वैद्य की कहानी, थर्मापोली के युद्ध की कथा फारस के अमीरों व साधारण मनुष्यों के रहन-सहन की काल्पनिक कथाएँ ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) **प्राचीन रोम**—रोमन रेगुलस की कहानी, जूलियस सीज़र, मार्कस ऑरेलियस आदि की कहानियाँ, कुछ सरल कहानियों द्वारा प्राचीन रोमन साम्राज्य में जन-साधारण का जीवन तथा रोम के प्रमुख सम्राटों की जीवनी का परिचय।

(४) **प्राचीन यूनान**—ऐथन्स के एक स्वतन्त्र नागरिक की दिनचर्य्या, होमर के महाकाव्यों की कथाएँ, आलम्पिक खेल प्रतियोगिता का दृश्य, यूनान और ईराक की किसी प्रसिद्ध लड़ाई का वर्णन, सिकन्दर महान् की कहानी, कुछ यूनानी देवताओं और योद्धाओं का सामान्य ज्ञान (कहानियों के रूप में)।

(ख) भूगोल

पिछली कक्षाओं के ज्ञान के अतिरिक्त निम्नलिखित बातों की यथासंभव प्रत्यक्ष जानकारी कराना और इनके सम्बन्ध में कुछ विशेष मोटी बातें बतलाना :—

(१) **आकाश परिचय**— सौर परिवार, ग्रह तथा उपग्रह। ग्रह तथा नक्षत्र में भेद

(२) **पृथ्वी-परिचय** — (परिभाषाएँ बतलाना)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा ३]

प्राकृतिक पदार्थ —पर्वत, पर्वत-श्रेणी, दर्रा, घाटी, ज्वालामुखी, नदी, झरने, झील, पठार और मैदान।

कृत्रिम पदार्थ—गांव, कसबा, नगर, रेलवे जंकशन, स्टेशन बन्दरगाह और हवाई स्टेशन (एरोड्रम)।

(३) नैसर्गिक दृश्य और व्यापार (Natural Pheuomena ,—चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण का परिचय।

(४) देश-परिचय—(ग्लोब तथा मानचित्र द्वारा)

(१) भारतवर्ष के प्रान्तों का ज्ञान।

(२) अपने ग्राम (वनस्थली) का भूगोल:—
(निम्नलिखित शार्षकों के अनुसार)

(१) स्थिति (जयपुर राज्य के नक़शे का परिचय और उसमें निवाई तहसील और वनस्थली का स्थान)
(२) धरातल (३) जलवायु और मौसम
(४) उपज (इनके बोने और काटने का समय)
(५) सिंचाई के साधन (६) खनिज पदार्थ।
(७) उद्यम (८ निवासी (इनका रहन-सहन, खान-पान, वेष-भूषा, बोली और शिक्षा आदि)
(९) जन संख्या (१०) डाकखाना, चुङ्गी और थाना।
(११) बाजार (१२) रेलवेस्टेशन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

नोट—(१) जहाँ तक संभव हो सके उपरोक्त बातों का भ्रमण द्वारा प्रत्यक्ष अध्ययन कराना।

(२) ग्राम के भूगोल के स्थान पर जिले या रियासत का भूगोल भी बतलाया जा सकता है।

(५) भौगोलिक कहानियाँ :—

निम्नलिखित लोगों के विषय में इनके रहन-सहन, खान-पान और बेश-भूषा की परिचायक कहानियाँ बतलाना :—

(क) अफ़रीदी, फारस, चीन, जापान, स्विट्ज़रलैण्ड, इङ्गलैण्ड रेडइंडियन और रूस में सामूहिक खेती करने वाले लोग।

(ख) भारत के द्रविड, कौल, संथाल, गौंड़, राजपूताने के भील और लंका के वेद।

(ग) सरल नागरिक शास्त्र

१—नागरिक शास्त्र —

निम्नलिखित अङ्गों में ग्राम जीवन का निरीक्षण और अध्ययन —खान—पान, वस्त्र, पानी, घर, व्यवसाय, देवालय, खेलकूद, मनोरंजन, मेले, और त्यौहार, दवाखाना, डाकघर, तालाब, सड़कें, खेल मैदान, निकटतम रेलवे स्टेशन, पुस्तकालय और वाचनालय,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कक्षा ३]

प्रकाश और पानी की व्यवस्था, अखाड़े और स्वास्थ्यगृह, और शिक्षण (विद्यालय)।

उपर्युक्त आधार पर एक आदर्श ग्राम की कल्पना का विकास किया जाय।

४ गृह-विज्ञान

शरीर की स्वच्छता— अपने तथा दूसरों के लिये सफाई की आवश्यकता, शरीर में घाव हो जाने तथा कट जाने पर सफाई न रखने से हानियाँ, गंदगी का दुष्परिणाम, बाल साफ (कैसे) रखना चाहिये, उनकी सँभाल, स्नान, नहाने का तरीका, साबुन का प्रयोग, ठंडा पानी नहाने के लिये लाभ दायक होता है। गरम पानी कपड़ा धोने के लिये अच्छा है। हाथ, मुँह पाँव आदि दिन में कई बार धोना चाहिये। शरीर को बाहर और भीतर से स्वच्छ रखने की जरूरत, दस्त और कब्ज।

कपड़ों की स्वच्छता—बदलने की आवश्यकता

ताजी हवा और धूप—फेफड़ों के लिये ताजी हवा की आवश्यकता, शुद्ध, ताजी हवा खुले स्थानों और बागों में मिलती है।

साँस लेना—उचित रूप से साँस लेने की शिक्षा, मुँह से साँस

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[कक्षा ३

लेने की हानियाँ, हवा को स्वच्छ और गर्म बनाकर भीतर भेजने में नाक का कार्य।

आराम करने की आवश्यकता, नींद की जरूरत, अच्छे पवादार कमरे में रहने के फायदे, खिड़कियों का खुला रहना, मुँह ढक कर न सोना।

दाँत— फायदे, अच्छे रखने के उपाय, दातून, मंजन, पान चबाने का दाँतो पर प्रभाव, कुरंदने से हानियाँ।

थूकना— चाहे जहाँ न थूकें, इससे बीमारी फैलती है।

साधारण विज्ञान

(क) जीव विज्ञान— मधु मक्खी, खटमल, पिस्सू, दीमक, जूँ, मोर, कबूतर, तोता, खरगोश के बारे में जानकारी ! उनके शरीर की बनावट की खास २ बातें और रहन सहन का तरीका।

(ख) वनस्पति विज्ञान — पेड़ पौधों के पृथक पृथक भागों का काम

(ग) प्रकृति विज्ञान धुन्ध, कोहरा, ओस, और बादल क्यों दिखाई देते हैं। इन्द्र धनुष क्यों दिखाई देता है। हवा की मनुष्य और वनस्पति जीवन के लिये आवश्यकता। ताजी हवा का महत्व। कसीबस्तु के जलने के लिये हवा की आवश्यकता।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६: अंग्रेजी

ENGLISH

In the first quarter of the year the teacher should acquaint the taught with all the 26 letters of the Roman alphabet. The use of pictorial alphabetical chart and letters of ply-wood or card may be made with advantage. Care must be taken to see that the charts selected for the purpose exhibit only such pictures (corresponding to the letters) as are of every day sight or use. The letters may be taught in their proper order, but the students must be given thorough practice of recognising the written of the printed capital and small letters individually and separately.

The teaching of the alpahabet must be classified under the following heads.—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1. READING and PRONUNCIATION.

The students must be given a sound and thorough training in the sounds, with their proper accents, of the letters by making them repeat after the teacher individually and collectively.

2. WRITING and SPELLING.

The students now may be introduced to the writing of the two Capital and Small formes of letters. Beginning with slates they must be taught to write them on fourlined copy-books and, still later, on printed copy books for transliteration and caligraphy.

The students must be taught the correct position of the hand and fingers and their grip of the pens. 'G' nib must invariably be used for this purposes.

The students having been well versedi n the reading pronunciation and writing of letters must be introduced to words according o the prescribed Primer.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

• CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

1. READING, SPELLING and PRONUNCIATION

The students must know the correct spellings and pronunciation of the words introduced in the Primer.

They must also be taught to read aloud individually and collectively small and simple sentences embodying some actions from the primer. A thorough drilling will facilitate the work.

2. MEANING and CONVERSATION.

The teacher must acquaint the students with the meaning of the words and sentences by actions corrosponding to them or by their Indian equivalents and, if possible, by actual and practical demonstration.

Having understood, thus, the meanings of sentences corelated with their actions the students must be made to have simple conversation with the teacher and among themselves about the objects and things of daily use on the basis of the words read.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(3) WRITING and COMPOSITION.

(i) The students will now write on their four lined copy books the words and sentences that they have read in their primer and understood. Great care must be take to infuse a keen sense of symetry, neatness and accuracy in the construction of the separate letters and their mixture into words.

(ii) Dictation of words read in Primer

Practice in Composition must be given orally and in writing under the following heads.

(i) Use of the Present indefinite tense.

(ii) Assertive, interrogative, imperative sentences in affirmative and negative forms

(iii) Use of 'yes' and 'no'

(iv) Use of personal pronouns excepting 'thou'.

(v) Common verbs and simple propositionns

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(vi) Singular and Plural numbers.

(4) **VOCABULARY**

150 simple words including.

(i) names of the parts of the body.
(ii) „ „ colours.
(iii) „ „ Fruits & vegetables.
(iv) „ „ Articles of dress & wear.
(v) „ „ Days of the weeks and months, or the year.
(vi) „ „ Articles of daily use in the class room & home.

(vii) Numbers upto hundred.

हिन्दी

भाषा-शिक्षा के निम्नलिखित अङ्ग होंगे :—

(क) मौखिक अभ्यास

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(अ) वार्तालाप (संलाप) (आ) कथा-कहानियाँ (इ) कवितापाठ (ई) अभिनय (उ) वर्णन के कार्यों को आगे प्रगति देते हुए

(१) सामान्य ज्ञान से सम्बन्धित किसी नियत विषय पर छोटा भाषण देने का अभ्यास कराना चाहिए।

(२) किसी रोचक विषय पर वाद-विवाद करना। छात्राओं की अपनी वादविवाद- सभा (परिषद) द्वारा इस दिशा में अभ्यास कराया जा सकता है।

(ख) वाचन

गद्य

(अ) प्रकृति-जीवन (आ) बाल-जीवन के विविध क्षेत्र (इ) स्वास्थ्य (ई) खेती तथा अन्य गृह और ग्रामोद्योग (उ) सभा-समारोह, और त्यौहार-उत्सव (ऊ) पौराणिक अथवा लोक-कथाएँ (ए) अन्य देशों के बाल-जीवन की कहानियाँ (ऐ) भारत के ग्रामीण कर-कौशलों और कलाओं की कहानियाँ (ओ) मानव सभ्यताओं से सम्बद्ध कहानियाँ (औ) महान अन्वेषणों और आविष्कारों की कहानियाँ (अं) मानव-जीवन के महान हित-साधकों (जैसे जरथुस्त्र, सुकरात, हुसैन, लिंकन, पास्चर, फ्लोरेंस नाइटिंगेल, अशोक, टॉलस्टॉय वाशिंगटन, सनयातसेन, गाँधी, रवीन्द्रनाथ, आदि की जीवन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कथाएँ) (अः) संसार के भिन्न-भिन्न भागों (जैसे टंड्रा आब, अलास्का, हब्श,) आदि के लोगों का विचित्र जीवन।

उपर्युक्त विषयों का सामान्य और सामाजिक विज्ञान के शिक्षण से निकट अनुबन्ध (Co-relation) रहेगा।

पद्य

सरल, वर्णनात्मक या विवरणात्मक प्राचीन तथा आधुनिक कविताएँ।

निम्नलिखित उपादानों से भाषा-ज्ञान की वृद्धि की जानी चाहिये :

(१) पाठों का शुद्ध, सस्वर, भावपूर्वक पाठ।

(२) प्रयुक्त शब्दों का अर्थ तथा उनका प्रयोग।

(३) स्वाध्याय की प्रवृत्ति उपार्जित करने की दृष्टि से मन में पढ़ना।

(ग) लेखन—

(अ) श्रुतिलेख—पिछली कक्षा के अनुसार। अब निब का प्रयोग होना चाहिए।

(आ) सुलेख— पिछली कक्षा के अनुसार। अब निब का प्रयोग होना चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(इ) पत्रलेख — माता-पिता, भाई-बहिन आदि को सरल पत्र।

(ई) आलेख— वस्तु-निरीक्षण के अभ्यास के उद्देश्य से रोचक घटनाओं या व्यापारों पर निबन्ध लिखना।

(उ) छोटी कक्षाओं के लिए एक मासिक पत्र निकालना जिसका विभाजन इस प्रकार हो—

(१) कक्षा, परिवार तथा ग्राम के हाल।

(२) गाँव की भौगोलिक और सामाजिक जाँच का सार।

(३) दैनिक और मासिक मौसम।

(४) कक्षा के कतार्ड, पढ़ाई, खेल आदि कार्यों की प्रगति।

(घ) कविता-पाठ

(अ) पठित कविता का भावपूर्ण ढंग से पाठ.

(आ) कंठस्थ कविता का सस्वर पाठ

(इ) अपूर्ण कविता को पूर्ण करने का अभ्यास।

५: गणित

अंकगणित—

(१) संख्याओं को अच्छी तरह गिनना और लिखना, दोहराना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) सरल व मिश्र– जोड़ बाकी गुणा व भाग–के प्रश्न ;

(३) मौखिक संक्षिप्त भाग १६ तक से। ४० तक के पहाड़े आने चाहिये।

(४) रुपया, आना व पाई और मन सेर छटांक तथा लम्बाई और समय के जोड़ बाकी गुणा व भाग के प्रश्न।
भाग पूर्णांकों से हो, अंश से नहीं)

(५) साधारण भिन्न– तथा उनकी जोड़ बाकी. (सरल व मिश्र जिनके हर २० तक तथा २० से कम हों। (मिश्र जोड़ बाकी में सही व बटे अलग अलग जोड़ें व घटाएँ)

(६) रूढ संख्याएँ व गुणनखंड और यौगिक संख्या। लघुतम समापवर्त्य (२० तक का)

(७) परिमाण– (हिन्दुस्तानी व अंग्रेजी परिमाणों का पारस्परिकसंबंध; सेर और पौंड, टन और मन)

(८) लंबाई, वजन व समय के नापों का छोटे या बडे में बदलना।

रेखागणित—

(१) ज्यामिति के उपकरणों (Geometrical Instruments) का ज्ञान और उपयोग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२ नियत लंबाई की रेखा खींचना- उसपर चांद से कोण बनाना;

(३) ज्यामिति की परिभाषाएँ; (रेखा, कोण त्रिभुज, चतुर्भुज वर्ग और आयत; और इनके भेद

(४) नियत अर्द्ध व्यास से वृत्त खींचना ;

(५) त्रिकोणों से नियत रेखा के समानान्तर रेखा खींचना ;

(६) ठोस आकृतियों की पहिचान तथा परिभाषा;

सूचना—इस कक्षा में रेखा गणित के लिए उपकरण अत्यंत आवश्यक हैं।

महाजनी और मौखिक—

(१) दोहराना - (भारतीय पद्धति से लिखना) तथा जोड़। १) तथा ।ऽ तक की बाकी।

(२) घर का हिसाब रखना- साधारण ! जमा व नाम; रोकड़ बाकी मिलाना।

(३) कक्षा ३ व ४ में सिखाए जाने वाले परिमाणों के गुर-मौखिक प्रश्न तथा पैमाने।

सूचना—गणित के इस विभाग पर खास जोर देना चाहिये क्योंकि भारतीय पद्धति. घर का हिसाब लिखना तथा मौखिक जोड़ बाकी, संक्षिप्त भाग, पैमाने और पहाड़े; एक बहुत आवश्यक अंग है।

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३ :– सामाजिक विज्ञान

'क' इतिहास

१—प्राचीन काल में जीवन कहानियों द्वारा निम्नलिखित का स्थूल ज्ञान कराया जाय:—

(१) हिन्दू भारत:—चन्द्रगुप्त, अशोक, कनिष्क, समुद्रगुप्त, विक्रमादित्य, आर्य्यभट्ट, शंकराचार्य, हूणसरदार मिहिरकुल, हर्षवर्धन और राज्यश्री, अरब सौदागर तथा उसका भारत से व्यापार, एक भारतीय व्यापारी या कलाकार का अन्य देशों में जाकर बसना, राजपूत राजा (पृथ्वीराज व जयचन्द)

(२) बौद्ध चीन:—कनफ्यूशियस और लाओत्सि, बौद्ध धर्म प्रचारक का भारत से चीन जाना, चीन की दीवार का निर्माण, चीनी-यात्रियों की कहानियाँ (फाहियान और ह्वाँनसाँग का भारत भ्रमण)।

(३) मुस्लिम एशिया:—पैगम्बर मुहम्मद का जीवन-चरित, उनके समय के अरब देश की सामाजिक और भौगोलिक परिस्थिति, मुस्लिम इतिहास के आदि-युग के कुछ नेताओं का परिचय (उमर, अली, हुसैन, खलीफा अब्दुल अज़ीज़), भारत और इस्लाम (मुसलमान व्यापारी और यात्री, मुहम्मद बिन कासिम, महमूद, मुहम्मद गौरी, अलाउद्दीन, मुहम्मद तुग़लक, अकबर

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

और औरङ्गजेब) इस्लाम का भाषा, साहित्य, धर्म कला पर प्रभाव।

(४) **ईसाई योरूप**—यहूदियों का धर्म-ग्रन्थ, ईसा और प्राचीन ईसाइयों की कहानी, रोम साम्राज्य और ईसाई मत, रोम के पोप, मार्टिन लूथर का धर्म-सुधार, ईसाइयों के दो भिन्नवर्ग, भारत में प्राथमिक ईसाइयों का वृत्तान्त।

[ख] भूगोल

पिछली कक्षाओं के ज्ञान के अतिरिक्त निम्न लिखित बातों का यथासम्भव प्रत्यक्ष परिचय तथा इन के विषय में कुछ विशेष ज्ञान।

(१) **आकाश-परिचय**— नक्षत्रों और ग्रहों की पृथ्वी से दूरी, इनका परिमाण, आकर्षण-शक्ति, ग्रहों की गति और इन के भू-पटल का स्थूल ज्ञान और प्रकाश की गति।

(२) **पृथ्वी-परिचय**—(परिभाषाओं का ज्ञान)

प्राकृतिक पदार्थ (१) सागर, महासागर, खाड़ी, द्वीप, महाद्वीप, प्रायद्वीप, अन्तरीप, जल व स्थल, संयोजक और जल विभाजक, (२) सूर्य, समुद्र, नदी और पर्वतों से लाभ।

कृत्रिम-पदार्थ (१) (परिभाषाओं का ज्ञान)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तहसील, जिला, कमिश्नरी, प्रान्त और देश।

(२) यात्रा के प्राचीन तथा अर्वाचीन साधन-इनसे लाभ व हानियाँ।

(३) दिशा और मानचित्र का ज्ञान—

(क) दिशायें-विदिशायें तथा इनके जानने की रीतियाँ।

(ख) रूपरेखा (खाका), चित्र तथा मानचित्र के भेद।

(ग) दूरी की माप और मापदण्ड (scale)।

(४) संसार की खोज की कहानियाँ—

मार्कोपोलो; वास्को डिगामा और कोलम्बस।

(५) देश-परिचय—

प्रान्त (राजपूताने) का भूगोल—

(निम्नलिखित शीर्षकों के अनुसार)

(१) स्थिति

(२) धरातल

(३) जलवायु

(४) उपज

(५) सिंचाई के साधन

(६) खनिज पदार्थ

(७) मुख्य उद्योग-धन्धे

(८) आवागमन के प्रधान साधन

(९) राजनैतिक विभाग

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(१०) मुख्य नगर और ग्राम

सूचना—विद्यार्थियों को आवश्यक बातों को राजपूताने के खाकों में भरना आना चाहिये तथा अन्य आवश्यक क्रियात्मक ज्ञान भी होना चाहिये।

(ग) सरल नागरिक शास्त्र

१ नागरिक जीवन

ग्राम की व्यवस्था, ग्राम के अधिकारियों, ग्राम-पंचायत और उसके कार्य का अध्ययन।

कक्षा में सचमुच एक पञ्चायत स्थापित की जाय या ग्राम-पंचायत को चलाता हुआ दिखाया जाना चाहिये।

४ : गृहविज्ञान

स्वास्थ्यरक्षा-जनक खाना, खाने की आदतें, पौष्टिक पदार्थों के खाने से ताकत बढ़ती है। रोगों से बचे रहते हैं। कमजोरी दूर हो जाती है दूध, हरी तरकारी, ताजे फल खाने के फायदे, मसाले तथा अधिक मीठा खाने से हानियाँ।

खाना समय पर खाना चाहिये, नियत समय के बीच में नहीं खाना चाहिये। प्यास नहीं रोकना चाहिये, मुँह में ग्रास रहते हुए पानी मत पीओ। खाने से पहले और बाद में मुँह हाथ धोना

बच्चों को कभी जूठा खाना और पानी नहीं देना चाहिये।

मादक वस्तुओं से हानियाँ – उनके नाम, चिन्ह, पीनेवाले

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

के मन और शरीर पर असर; नशा करना घर को सुख और सम्पत्ति के लिये हानिकारक है।

आँख और कान की रक्षा :— हरेक काम के लिए अच्छे प्रकाश की आवश्यकता, अँधेरे तथा कम रोशनी में पढ़ने से हानियाँ, झुककर पढ़ना या लिखना हानिकर है। आँखों की सफाई के लिये बोरिक का इस्तैमाल, कान में किसी चीज के चले जाने से नुकसान; कान की सफाई क तरकीब।

उड़कर लगने वाली साधारण बीमारियाँ:— कारण, फैलने के तरीके, बचने के उपाय।

मलेरिया :— जुकाम, खाँसी, चेचक, हैजा।

घरेलू स्वास्थ्य रक्षा :— घर में खाने तथा पीने की चीजों को ठीक-ठीक ढककर रखना, खाना तथा पानी कैसे खराब हो जाता है?

नगरों और ग्रामों की सफाई:— घर के कूड़े-करकट की उचित व्यवस्था?

५:—साधारण विज्ञान

(क) जीव ज्ञान:— मेंढ़क, कैंचुआ मछली, घोंघा, उल्लू, चील, साँप, बिच्छू आदि के रहन-सहन का परिचय और उनके शरीर की बनावट की खास-खास बातें।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ख) वनस्पति विज्ञान:—पदार्थ वृक्षों का सांस लेना। उनका रात को (कारबन डायक् साइड) और दिन को (औक्सिजन) देना। वृक्षों से मनुष्य को हानि और लाभ।

(ग) प्रकृति विज्ञान:— ओस, कोहरा और पाला पड़ने का कारण। धुंए और कोहरे में भेद।

(घ) भौतिक विज्ञान :— पदार्थ की तीन अवस्थायें। उन पर गर्मी का असर, पानी पर गर्मी का असर। भाप का बनना। भाप पर ठण्ड का असर। मिट्टी के बर्त्तन में पानी ठण्डा होने का कारण। कूएँ का पानी का गर्मियों में ठण्डा और जाड़ों में गर्म होने का कारण।

---

६ : अंग्रेजी

The teaching of text books must be classified under the following heads :—

(1) READING AND PRONUNCIATION.

The students must be given to read with proper accents and pauses the passages in the text book.

The verses in the text should be recited

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

with proper English accent and rythm. If possible and necessary the student must be taught to make proper actions signifying the sense contained in the verse.

(2) WRITING AND COMPOSITION.

The students will copy out passages from their text book on their four—ruled copy-books. They will also write difficult words to the dictation of the teacher on two—ruled copy books. Printed caligraphy copy-books must also be used with advantage.

Practice in Composition may be had by the following methods.

(i) The students must be given simple sentences in Hindi for translation. The sentences must be selected so that they may be based on the words taught to them.

(ii) Oral practice must be done to enable the students to make use of.

(a) Present indefinite, present continuous, past indefinite and past countinuous and

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

future indefinite tenses in both affirmative and negative forms.

(b) Assertive, interrogative and imperative sentences.

(c) 'Let' and common infinitive;

(d) interrogative sentences, involving how, when, why and where.

(e) easier pronouns and common adjectives in all degrees.

(f) Simple conjunctions and adverbs.

(g) Verbs in active voice only.

3. COVERSATION AND RECITATI ON.

The students must be given further practice in conversation about common objects in the school garden, village and other articles of daily use.

The students must remember by heart five action poems and recite them with proper expre ssions and actions.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

4. VOCABULARY

Three hundred words (including those taught in the previous class) which should consists of

(i) words read in the previous class +
(ii) names of plants and trees.
(iii) ,, ,, birds and animals and their cries
(iv) ,, ,, seasons and weathers.
(v) ,, ,, divisions of day and night.
(vi) readings of clock.
(vii) names of relations.

१ : हिन्दी

भाषा शिक्षा के निम्नलिखित अङ्ग होंगे—

(क) मौखिक अभ्यास :— कक्षा चार के आगे प्रगति होनी चाहिये।

(ख) वाचन :— पठित पुस्तक में गद्य-पद्य अंशों का विभाजन इस प्रकार हो—

गद्य

(१) कथा-कहानियां :—

राष्ट्रीयता, हिन्दु-मुस्लिम-एकता, सर्वधर्म समभाव, नीति-निष्ठा,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

सच्चरित्रता आदि का विकास करने की प्रेरणा देनेवाली कथा-कहानियाँ और नाटक हों।

आदर्श नारियों (जैसे सीता, सावित्री, दमयन्ती, लक्ष्मीबाई, पद्मिनी, देवी जोन, दुर्गावती, फ्लोरेंस नाइटिंगेल, कस्तूरबा, कमला नेहरू आदि) को जीवन-कथायें; जिनसे छात्राओं के सामने भिन्न-भिन्न नैतिक आदर्श प्रस्तुत हों।

(२) जीवन-चरित:--

भारतीय सन्तों तथा महा पुरुषों के जीवन-चरित (जैसे मनु, राम, कृष्ण, बुद्ध, महावीर, अशोक, विक्रम, गांधी, तुलसीदास, रवीन्द्रनाथ, अरविन्द घोष, जवाहरलाल नेहरू)

(३) ज्ञान-विज्ञान विषयक :—

(i) खगोलिक— सूर्य, पृथ्वी, चन्द्रमा, तथा अन्य ग्रहों की उत्पत्ति और परिचय।

(ii) भौगोलिक (अ) भिन्न-भिन्न देशों के निवासियों की झलक

(आ) उत्तरी-दक्षिणी ध्रुव के अन्वेषण और गौरीशंकर-अभियान

(इ) भूचाल, ज्वार-भाटा, ज्वालामुखी, तूफान आदि भौगोलिक घटनाओं (Phenomena) से सम्बन्धित वर्णनात्मक लेख

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(iii) ऐतिहासिक—इतिहास के प्रधान व्यक्तियों जैसे—पृथ्वीराज चौहान, आल्हा-ऊदल, अशोक, चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, हर्ष अकबर, शिवाजी आदि की जीवन-कथाओं के माध्यम से तत्कालीन जीवन के चित्र प्रस्तुत हों।

(iv) वैज्ञानिक— हवा, पानी, धूप, बिजली, आदि के उपयोग, पञ्चतत्व, पेड़-पौधों में जीव, आविष्कार इत्यादि पर लेख।

पद्य

ब्रज तथा अवधी भाषाः— तुलसी, रहीम, वृन्द आदि के चुने हुए सरल दोहे और गिरिधर की सरल कुण्डलियां।

खड़ी बोली आधुनिक कवियों के सरल विवरणात्मक, वर्णनात्मक अथवा भावात्मक पद्य।

निम्नलिखित उपादानों से भाषा-ज्ञान के विकास में सहायता ली जानी चाहिये—

(१) ब्रज, अवधी, राजस्थानी आदि शब्दों के शुद्ध हिन्दी (तद्भव) और संस्कृत (तत्सम) रूप

(२) गद्य-पद्य पाठों में प्रयुक्त शब्दों का वाक्यों में प्रयोग

(३) क्लिष्ट शब्दों, मुहावरों, कहावतों का अर्थ और स्वरचित वाक्यों में प्रयोग

(४) पद्यों का अन्वय और अर्थ,

(५) शब्दों के पर्याय-विपर्याय का ज्ञान,

(६) नियत पद्यांशों को कंठस्थ करना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ग) व्याकरण :— संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया का परिचय (परिभाषा और उदाहरण के साथ। लिंग, वचन, कारक पुरुष और काल का ज्ञान, उद्देश्य-विधेय। साधारण वाक्य का विश्लेषण, कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य।

पठित पाठों के नीचे विषय और व्याकरण-ज्ञान की जाँच के लिए प्रश्नमाला होनी चाहिये।

'घ' लेखन

(अ) श्रुतिलेख तथा सुलेख—

पठित पुस्तक अथवा मासिक पत्र से समान कोटि के अवतरण बोलकर पतली क़लम अथवा घिसे हुए निब से लिखवाये जायँ। कठिन शब्दों की ओर विशेष ध्यान अपेक्षित है।

(आ) स्वलेख—

(i) समस्त घरेलू पत्रों के अतिरिक्त मित्रों और परिचित संबन्धियों को पत्र लिखना।

(ii) रूपरेखा के आधार पर सामान्य-साधारण वस्तुओं (जैसे नदी, रुपया, कपड़ा आदि) की आत्म-कथा, जीवनी, कहानी लिखना।

(iii) सरल विचार और वर्णनवाले निबन्ध—खेल-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

कूद, व्यायाम, गाँव, पाठशाला, खेत, ऋतुओं आदि का वर्णन

(इ) आलेख--मनोयोग के अभ्यास के लिये पठित पाठ या लेख का सार लिखना।

(ङ) कविता पाठ और भाषण—

(अ) पढ़ी हुई और कंठस्थ कविता का भावपूर्वक पाठ।

(आ) नियत विषय पर वाद-विवाद, संभाषण अथवा स्वतंत्र भाषण।

२:— गणित

अङ्कगणित

(१) चारों प्राथमिक क्रियाओं (+ — × ÷) पर आश्रित सरल व मिश्र प्रश्न कक्षा ४ तक के सारे काम को गुरों व पैमानों सहित दोहराना,

(२) लघुतम समापवर्त्य और महत्तम समापवर्तक

(३) भिन्न—(साधारण व मिश्र), सम व विषम भिन्न, मिश्र संख्याओं का जोड़ तथा बाकी-(सही बटे से-संक्षेप में) भिन्नों को संक्षेप करना-गुणा व भाग। कोष्ठकों का प्रयोग, तथा भागानुबन्ध भिन्न (Complex Fractions)

(४) छोटे पैमानों को बड़े में भिन्न बनाकर बदलना जैसे—आना व पाई के रुपये बनाना।

(५) ऐकिक नियम (Unitary Method)।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६) नाप व वजन के मैट्रिक व ब्रिटिश प्रणाली के पैमाने।

रेखागणित

पिछले अभ्यास के अतिरिक्त (रेखा, कोण, समानान्तर व वृत्त)-

(१) कोण को नापना तथा उसके समद्विभाग (परकार से),

(२) नियत रेखा का मध्यबिंदु निकालना, दिये हुए व्यास पर वृत्त (परकार से),

(३) रेखा के अन्दर (बीच में व किनारे) दिये हुए बिन्दु से लंब डालना (परकार से),

(४) रेखा के बाहर (बीच में व किनारे) दिये हुये बिन्दु से लंब डालना (परकार से),

(५) एक कोण के बराबर दूसरा कोण बनाना (परकार से),

सूचना--परिभाषायें व बनावट संक्षेप में लिखना।

महाजनी

(१) पिछले ज्ञान के अतिरिक्त (१) घर का खर्च लिखना-जमा व

(२) नाम, रोकड़ बहीमें जमा खर्च करना।

मौखिक

(१) भिन्न सरल करने के गुर,

(२) मन-सेर-छ०, तो०-मा०-र०, तथा गज-गिरह के गुर। गुरों द्वारा जबानी प्रश्न हल करना-उपयोगी उदाहरणों द्वारा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३:—सामाजिक विज्ञान

(क) इतिहास

१ — भारतीय इतिहास के निम्नलिखित प्रसिद्ध व्यक्तियों का परिचय कहानियों द्वारा कराया जाय —

(१) पठान काल:—महमूद, मुहम्मद गौरी, कुतुबुद्दीन, इल्तुतमिश, रजिया, बलबन, अमीर खुसरो, अलाउद्दीन, पद्मिनी, रामानन्द, वल्लभाचार्य, मुहम्मद तुगलक, राणा कुम्भा, राव जोधा, राव बीका महाराणा साँगा ।

(२) मुगल काल: बाबर, हुमायूं, शेरशाह, टोडरमल, अकबर प्रताप, पन्ना धाय, रानी दुर्गावती तुलसीदास, सूरदास, बीरबल, तानसेन, नूरजहाँ, शाहजहाँ, मुमताजमहल, औरंगजेब, दुर्गादास, शिवाजी, छत्रसाल, गुरु गोविन्दसिंह, जीजाबाई, राणा राजसिंह ।

२—अन्यदेशीय ऐतिहासिक व्यक्तियों का परिचय दिया जाय-

देवी जोन, न्यूटन, वास्कोडिगामा, गैलीलियो, जार्ज वाशिंगटन, सुन-यत-सेन, पैरीक्लीज़, पीटर महान्, लुई चौदवाँ, नैपोलियन, मुस्तफा कमाल पाशा ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

[ख] भूगोल

(१) प्राकृतिक भूगोल--

पृथ्वी के जन्म की कहानी, पृथ्वी का सौर-मण्डल में स्थान, पृथ्वी का आकार और गति, दिन-रात का बनना, भूमध्य, कर्क और मकर रेखायें, उत्तरी तथा दक्षिणी ध्रुव वृत्त, ताप-कटिबन्ध।

(२) पृथ्वी के जल व स्थल विभाग, महाद्वीपों और महासागरों के नाम और उनकी स्थिति।

इनको दुनियाँ की रूपरेखाओं में भरना।

(३) भारतवर्ष का भूगोल—(ब्रह्मा और लङ्का सहित)

(१) स्थिति, सीमा व विस्तार।

(२) समुद्रतट व धरातल।

(३) जलवायु और मानसून हवायें। किसी देश की जलवायु की निम्नलिखित बातों पर निर्भरता।

(१) सूर्य से दूरी (२) समुद्र से दूरी (३) समुद्र के धरातल से ऊँचाई (४) मिट्टी (५) पहाड़ों की प्रवृत्ति (रुख)। (६) हवाओं की प्रवृत्ति। (७) वर्षा। (८) जल धारायें।

(४) सिंचाई के साधन

(५) वनस्पति

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(६) उपज (प्रत्येक फसल के लिए किस प्रकार की मिट्टी और जलवायु की आवश्यकता होनी चाहिए ?)
(७) खनिज पदार्थ
(८) उद्योग-धन्धे
(९) आवागमन के साधन-स्थल, जल व वायुमार्ग
(१०) व्यापार (आयात-निर्यात)
(११) जन-संख्या
(१२) निवासी
(१३) विभिन्न भाषायें (बोलियाँ)
(१४) राजनैतिक विभाग
(१५) मुख्य नगर व बन्दरगाह

नोटः—(१) विद्यार्थियों को आवश्यक बातों को भारतवर्ष के खाकों में भरवाना चाहिये तथा अन्य क्रियात्मक ज्ञान भी होना चाहिये ।

(२) हाथ से भारतवर्ष का मानचित्र खींचने का अभ्यास ।

[ग] सरल नागरिक शास्त्र

नागरिक जीवन —व्यवस्थिति संस्था के रूप में नगर का अध्ययन निम्नलिखित अङ्गों में:—

ग्राम से उसका संबन्ध—उनका पारस्परिक अन्योन्याश्रित संबंध-गाम से नगर में जा बसना-भोजन इत्यादि बातों का अध्ययन—नगर की व्यवस्था—म्यूनिसिपैलिटी, उसके संस्थागत कार्य ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ : गृह विज्ञान

(क) स्वास्थ्य रक्षा:—

शारीरिक स्वास्थ्य:—शरीर की सफाई की आवश्यकता (त्वचा, मुँह, दाँत, आँख, नाक, कान और बाल) कपड़े, बिस्तर, मकान, रसोईघर और बर्तनों की सफाई। ताजी और शुद्ध हवा आने-जाने का प्रबन्ध। पानी तथा उसके प्रति स्थान-गंदे होजाने के कारण। स्वच्छ पानी प्राप्त करने के साधन।

नाना प्रकार के भोज्य पदार्थों की जरूरत, खाने के नियम। और व्यायाम और नींद की आवश्यकता।

मादक द्रव्य (गाँजा, अफीम, भाँग, मदिरादि का मस्तिष्क और पाचन-क्रिया पर प्रभाव। थर्मामीटर का प्रयोग।

(ख) शरीर-विज्ञान (Physiology) —

(१) मानुषी ढांचा (२) खाना हजम करने के अवयव (३) खून का दौरा, सांस लेना-इनकी साधारण जानकारी। प्रथम एक दो संस्थान (System) विस्तृत ज्ञान कराया जाय।

[ग] साधारण उपचार—

टिंक्चर, कुनैन, तुलसी की पत्ती, लौंग, चिरायता, गरारे (Gargles) मंजन, गंधक, नीम, पीपल सुदर्शन, अरंडी आदि कुछ घरेलू औषधियों और उपचारों का प्रयोग।

५ : साधारण विज्ञान

[क] भौतिक विज्ञान (Physics)

(१) टोंटी (Tap), नल (Pipes) और फव्वारा (Fountains) का व्यापार (Function) और सिद्धांत (Principle)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) थर्मामीटर, उसकी बनावट और उपयोग। थर्मामीटर को तैयार करने की पद्धति।

[ख] रसायनिक विज्ञान (chemistry)

(१) पानी मिलने के साधन। पानी की अशुद्धियाँ और गंदगी। पानी का शुद्ध करना। भाफ का ठण्डा करना। धुंध, ओस, कोहरा, बादल, और पानी। वर्षा के पानी के फायदे और उपयोग।

(२) हवा—हवा में वजन, शक्ति दबाव। हवा की पेड़-पौधों और जीव-जन्तुओं को आवश्यकता। वस्तुओं के जलने में हवा की आवश्यकता हवा के तत्त्व। हवाई मिलें।

[ग] जीव-ज्ञान (Animal life)

जीव-जन्तुओं का वर्ग-विभाजन। कुछ साधारण जीव-जन्तुओं का अध्ययन। मछली, मेंढक, केंचुआ, तितली आदि। उनके शरीर की बनावट और स्वभाव। कुछ खास बातें।

[घ] वनस्पति विज्ञान (Plant-life)

पड़ौस के कुछ साधारण पेड़-पौधों का अध्ययन। वातावरण का पेड़-पौधों पर प्रभाव।

६ : अंग्रेजी

The teaching of text books must be classified under the following heads :—

1. Reading and Pronunciation.

The students must be taught to read with proper accents and pauses the passages in the

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

text book. The verses in the text should be recited with proper English accent and rhythm. Where necessary the students must be taught to make proper actions signifying the sense contained in the verse.

2. Writing and Compositions.

The students will copy out passages from their text book on their copy books. They will also write on their copy books passages dictated by the teacher.

Practice in Composition must be given as under :—

(i) Picture Composition.

(ii) filling in the blanks.

(iii) Writing of connected sentences on common living beings and lifeless objects.

(iv) Reproduction of Stories from rapid, readers and questions on the subject matter of the lessons in the text book.

(v) Simple letters to mother, father brother, sister and friend

(vi) Construction of Present indefinite, continuous, and Perfect, Past indefinite, continuous and perfect and Future infinite and Continuous, assertive, interrogative and imperative sentences

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

in both affirmative and negative forms.

Conversion of sentences from one tense and orm to another.

3. Translation and Grammar

Practice in sentences invoving constructions as mentioned under the head "Writing and Composition."

The students must possess the following knowledge in Grammar, Number, Gender ? Forms of sentences Subject and Predicate, Parts of Speech—Noun, Pronoun Adjective and verb. (without their kinds)

4. Recitation and Conversation

Recitation of 10 Poems other than those learnt in the previous class.

The students should be able to answer questions put on the subject matter of the lessons in the text book and have simple conversation about the following topics.

Class room objects, Human limbs, beasts and animals, pictures in the book or elsewhere or similar other common and simple matters.

5. VocabULiary

The students from this class onwards will know the use of all the Words learnt by them in their Text and Rapid Readers.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

१: हिन्दी

भाषा और साहित्य का अध्ययन इस प्रकार होना चाहिए—

[क] मौखिक अभ्यास : पूर्ववत ।

[ख] वाचन : पाठ्य पुस्तक में गद्य-पद्य अंशों का विभाजन इस प्रकार हो—

गद्य

(१) धार्मिक: ईसा, मुहम्मद, कनफ्यूशियस जरथुस्त्र आदि धर्म-प्रवर्त्तकों की शिक्षा और धर्म-समन्वय का पाठ

(२) नैतिक: नैतिक गुणों के विकास की दृष्टि से ऐसी कहानियाँ, एकांकी नाटक या नाटकों के दृश्य जिनमें हिन्दू, मुस्लिम, एकता, राष्ट्रभक्ति, समाज सेवा, त्याग, बलिदान आदि के भाव हों

(३) साहित्यक और सांस्कृतिक: सूर, तुलसी, वाल्मीकि व्यास, विवेकानन्द, रामकृष्ण परमहंस, रामतीर्थ अरविन्द घोष, तानसेन इत्यादि की जीवनियाँ

(४) भौगोलिक: देश-विदेश के जीवन की झाँकी

(५) ऐतिहासिक: देश के प्रधान व्यक्तियों (जैसे अकबर, तुलसीदास, शिवाजी, दयानन्द सरस्वती, मदनमोहन मालवीय, रवीन्द्रनाथ, गांधी आदि) की जीवन-कथाओं द्वारा राष्ट्रजीवन का ज्ञान।

(६) ज्ञान, विज्ञान विषयक—पृथ्वी पर जीव की उत्पत्ति और विकास, मानव सभ्यता और संस्कृति के विकास की रूपरेखा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

पद्य

(१) तुलसी की चौपाइयाँ, सूर के सरल पद, कबीर की साखियां और सरल पद, भारतेन्दु, सत्यनारायण, रसखान, सेनापति, वियोगी हरि, रत्नाकर आदि कवियों के व्रजभाषा के पद्य (यह संकलन कालक्रम से होना चाहिये ।)

(२) हरिऔध, प्रसाद, मैथिलीशरण, सियारामशरण महावीर प्रसाद द्विवेदी, गोपालशरणसिंह, अनूपशर्मा, रामनरेश त्रिपाठी आदि की सरल खड़ी बोली कविताओं का संकलन ।

—विशेष—

निम्नलिखित उपादानों से भाषा और साहित्य के ज्ञान की वृद्धि में उचित सहायता ली जानी चाहिए ।

(१) कवियों का सरल परिचय,

(२) व्रज, अवधी. राजस्थानी भाषाओं के शुद्ध हिन्दी और संस्कृत रूप,

(३) गद्य-पद्य अवतरणों में प्रयुक्त शब्दों का वाक्यों में प्रयोग;

(४) क्लिष्ट शब्दों मुहावरों, कहावतों का अर्थ और स्वरचित वाक्यों में प्रयोग;

(५) पद्यों का सान्वय अर्थ;

(६) शब्दों के पर्याय और विपर्याय का ज्ञान,

(७) नियत पद्यांशों को कण्ठस्थ करना,

(८) हिन्दी शब्दों की व्युतपत्ति, तत्सम, तद्भव और आवश्यक हो तो फारसी पर्याय.

(९) अपठित गद्य-पद्यांशों के अर्थ का अभ्यास । इसका चुनाव बाहर से होना चाहिए ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ग) व्याकरण [पिछली कक्षा के अतिरिक्त]

विशेषण, विकारी और अविकारी (अव्यय) शब्दों का ज्ञान, शब्द-निरुक्ति (पदान्वय) साधारण वाक्य का विश्लेषण (Tabular analysis) विराम चिह्नों का उचित प्रयोग, समासों का साधारण ज्ञान।

पाठों के नीचे विषय और व्याकरण-ज्ञान की जाँच के लिए प्रश्नमाला होनी चाहिये।

(घ) लेखन

(अ) श्रुतिलेख (जिसमें सुलेख भी सम्मिलित है) कक्षा ५ के अनुसार।

(आ) स्वलेख (कक्षा ५ के अतिरिक्त)

(i) व्यापारिक पत्र, (कम्पनियों, दूकानदारों, कार्यालयों और संस्थाओं को) विज्ञापन, सूचना, निमन्त्रण तथा शोक-सम्वेदना के पत्र;

(ii) रूपरेखा के आधार पर कहानी की रचना।

(iii) सरल वर्णनात्मक और विवरणात्मक निबंध (जैसे गङ्गा, कोई ऋतु, भारतवर्ष, विद्यालय, सत्य आदि)

(इ) आलेख : मनोयोग के अभ्यास के लिए किसी पाठ या लेख का सार लिखना।

(ङ) कविता-पाठ और भाषण :

कंठस्थ कविता का भावपूर्ण पाठ और वाद-विवाद के योग्य विषयों पर पक्ष-विपक्ष में भाषण देना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२: गणित

अङ्कगणित

(१) दशमलव भिन्न का ज्ञान तथा उपयोग उसका जोड़, बाकी, गुणा व भाग (+, –, ×, ÷) साधारण व मिश्र, दशमलव,

(२) साधारण भिन्न व दशमलव भिन्न का पारस्परिक परिवर्तन,

(३) वर्ग व वर्गमूल;

(४) साधारण ब्याज तथा समय, मूलधन व दर निकालना,

(५) प्रतिशत व सरल लाभ-हानि,

(६) भिन्नों के कठिन प्रश्न—ठीक तरीके व सफाई से हल करना।

रेखागणित

(१) पिछला दोहराना तथा कोण ६०°, ३०°, ९०°, ४५° तथा १२०° (परकार से)

(२) रेखा के दो से अधिक बराबर भाग करना तथा समानान्तर खींचना (परकार से)

(३) वृत्त के बराबर वृत्त (दिये हुये व्यास या अर्द्ध व्यास से) बनाना,

(४) प्रस्तावना व प्रयोगात्मक कार्य—स्वयंसिद्धियाँ तथा परिभाषाएँ—और रेखा, वृत्त, कोण, समानान्तर तथा त्रिभुज के प्रायोगिक कार्य (रेखागणित के प्रमेयोपपाद्य साध्यों के पहले का दिया हुआ कार्य)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

महाजनी

(१) रोकड़ बही, उधार की रकमों का जमा-खर्च करना,—रकमों का खातों के नामों से जमा-खर्च करना,

(२) खाता बही तथा खतौनी तथा पिछला दोहराना,

मौखिक

(१) पिछला दोहराना तथा विस्तार, तथा वेतन निकालने के गुर (दिन से महीना और महीने से दिन का-उपयोगी उदाहरणों का हल),

(२) ब्याज निकालने के आसान गुर और मामूली प्रश्न हल करना।

३ सामाजिक विज्ञान

[क] इतिहास

१—भारतीय इतिहास के प्रसिद्ध व्यक्तिः—

(१) **आधुनिक काल**— क्लाइव, डूप्ले, हैदरअली, वारन् हेस्टिंग्ज, कार्नवालिस, वेलेजली, विलियम बेंटिंग, रणजीत-सिंह, अहिल्याबाई, राममोहनराय, डलहौजी, लक्ष्मीबाई, लार्ड-रिपन, सर सैयद अहमदखाँ, मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी सरोजनी नायडू, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर, दयानंद सरस्वती, विवेकानंद, रामकृष्ण, लो० तिलक, गोपालकृष्ण गोखले, दादाभाई नौरोजी, जवाहरलाल नेहरू, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, कमला नेहरू, जगदीशचन्द्र बसु, सी० वी० रमन, जमशेदजी टाटा।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

२–अन्यदेशीय ऐतिहासिक व्यक्ति––

मैजिनी, गैरीबाल्डी, अब्राहम लिंकन, फ्लोरेंस नाइटिंगेल, टॉल्स्टाय, कार्ल मार्क्स, लेनिन, ट्राटस्की, मैडम चांग एडिसन, डी वेलेरा, हिटलर, मुसोलिनी, स्टालिन, प्रेसीडेण्ट विल्सन और रुजवेल्ट।

[ख] भूगोल

१––प्राकृतिक भूगोलः—

(१) ऋतु परिवर्तन। दिन रात छोटे बड़े होने के कारण।

(२) अक्षांश तथा देशान्तर रेखाओं का ज्ञान एवं इनकी उपयोगिता। स्थानीय तथा प्रामाणिक समय और इसे निकालना।

२–वायुमण्डलः—हवा में गैसें, हवा और धूलिकण। हवा और भाप, हवा की विशेषतायें, व तापक्रम, तापमापक यन्त्र (Thermometer), वायु आर्द्रतामापक यंत्र (Wet & Dry bul Thermometer) वायु भारमापक यंत्र (Barometer) का अध्ययन। ओस, पाला, कोहरा, धुंध, बादल वर्षा, तुषार, ओले, बिजली, मेघ-गर्जन, के कारण। वर्षामापक यंत्र, (Rain Gauge पृथ्वी पर वायु-भार। तापक्रम तथा वर्षा का लेखा (record) रखना।

(४) चंद्रमा और उसकी कलायें।

(५) चंद्र और सूर्य ग्रहण।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ **पृथ्वी की बनावटः-** पृथ्वी के भीतर की गरमी, पृथ्वी की रचना, पृथ्वी को बनाने व बिगाड़ने वाली शक्तियाँ-

(१) आंतरिक शक्तियाँ:—भूकम्प तथा ज्वालामुखी पर्वतों का उद्‌गार ।

(२) वाह्य शक्तियाँ:—वृष्टि और बहता हुआ पानी, हवा, गरमी, पाला, हिमसरित (Glacier), समुद्र और भूगर्भ जल (Underground water)

३-संसार का भूगोलः--(निम्नलिखित शीर्षकों के अनुसार.

(१) धरातल व समुद्र-तट

(२) दुनियाँ के विभिन्न देशों तथा उनके मुख्य नगरों व बंदरगाहों का परिचय ।

नोटः—विद्यार्थियों को आवश्यक बातों को दुनिया की रूप-रेखा में भरवाना चाहिए तथा अन्य क्रियात्मक ज्ञान होना चाहिये ।

(३) कक्षा ५ के पाठ्यक्रम की आवृत्ति ।

(ग)सरल नागरिक शास्त्र

नागरिक जीवनः--

(क) जिले की व्यवस्था का अध्ययन तथा प्रांतीय सरकार की रूपरेखा का परिचय ।

(ख) देशी राज्यों की शासन-व्यवस्था का संक्षिप्त परिचय ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

४ः गृहविज्ञान

[१] स्वास्थ्य-रक्षा

कक्षा ५ के पाठ्यक्रम की बीमारियों का कुछ विशेष अध्ययन (छूत की बीमारियों से बचने के उपाय)

(२) शरीर-विज्ञान

कक्षा ५ में पढ़े हुए विषय को दोहराना तथा उनकी विशेष जानकारी, पाचन शक्ति (Digestive System) रक्त-प्रवाह (Circulatory System) की विशेष जानकारी।

(३) साधारण उपचार

अमृतधारा, काढ़ा, जुलाब त्रिफला, काली मिर्च, अजवयान लौंग और चूने के उपचार।

(४) रोगी-परिचर्या (Home--Nursing)

बीमारों की देख-रेख के साधारण नियम, कमरे को ठीक और साफ रखना, बीमार के दवा देने, खाने और खुश रखने की व्यवस्था करना।

कीटाणु-नाशक औषधियों की जानकारी, घाव आदि के इलाज। आई ग्लास(eye glass) चिलमची, बेडपैन आदि का प्रयोग।

(५) प्राथमिक उपचार (First Aid)

पट्टी बाँधना चोट आना, बेहोशी, जहरीले जानवरों का काटना, आँख-कान में किसी चीज का गिर जाना।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

५ साधारण विज्ञान

(ग) भौतिक विज्ञान (Physics)

१, वस्तुओं की लम्बाई, चौड़ाई, मोटाई क्षेत्रफल, और आयतन (Density) निकालना सुडौल वस्तुओं का आयतन निकालना।

२, बेडौल और असमान वस्तुओं का आयतन विकालना। नपना (Graduated Cylinder) और ब्यूरेट [Burette] का व्यवहार। द्रव का आयतन।

३, घनत्व। मात्रा [Mass] और भार [Weight] मात्रा और भार में भेद।

४, लिवरों [Levers] का सिद्धांत। विभिन्न लिवर। भौतिक तुला [Physica.- Bala.ıce] और स्प्रिङ्ग तुला [Spring Balance]।

५, चुम्बक [Magnet] के गुण। प्राकृतिक और कृत्रिम चुम्बक। शक्ति रेखायें [Lines of Force]। कुतुबनुमा [Mariner's compass]। जल-स्थल पर उसका उपयोग।

६, ठोस द्रव और गैस पर गर्मी का असर। अवस्था, आयतन और तापमान में परिवर्तन [Centigrade & Fahreinheit] थर्मामीटर [Thermometers] डाक्टरी और मैक्जियम-मिनियम थर्मामीटर Clinical thermomtoer and Maximum & minimum thermometer।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(घ) रसायनशास्त्र [Chemistry]

१, पानी। उसे साफ और शुद्ध कैसे किया जाये? निथारना [Decantation] छानना [Filteration] और भाफ बनाना और ठण्डा करना [Distillation] भाफ बनाना [Evaporation] और जमाना Condensation], पानी खौलते और जमने का निशान [Boiling point and Freezing point] कई तरह का पानी। पानी के विभिन्न रूप हलका और भारी पानी [Soft and hard water]। भारी पानी को हलका बनाना।

२, मिश्रण को अलग-अलग करना। घुलित [Solute] घोलक [Solent] और घोल [Solution]। रवे [Crystals] और रवे बनाने की क्रिया [Crystallization]। सूती और रेशमी कपड़ों के दाग छुड़ाना। चिकनाई और स्याही के धब्बे छुड़ाना। सूखी धुलाई। [Dry cleaning]।

(क) जीव-विज्ञान [Animals]

शहद की मक्खी, मक्खी और मच्छर का वृत्तांत।

(ख) वनस्पति-विज्ञान [Plants]

फूल के भाग। उन भागों का कुछ काम। जड़ और उनका स्वभाव। पेड़ पौधों की वनस्पति उपयोगिता और गुण, कलम लगाना, जोड़ लगाना, आंख लगाना [Cutting, grafting and budding]।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

६ : अंग्रेजी

The teaching of text book must be classified under the following heads :—

1. Reading and Explanation.

The Prose and poetical pieces in the text should be read and recited properly. The student must be acquainted with the meaning and explanations of the texts. Difficult words should be explanied in Hindi as well as in English equivalents.

The study of prose lessons, must be done as under.

(i) Rendering of difficult pieces into Hindi and English.

(ii) Answering of questions based on the subject-matter of the lessons in the Text and Rapid readers,

(iii) Explanations of poetical pieces into Simple prose.

(iv) Explanation of figurative and idiomatic explanations and phrases into simple English and Hindi.

(v) Synonyms and antonyms of important English words.

(vi) Prose order of verses.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. Grammar

(a) Parts of Speech and sub-classification of noun, pronoun, adjective with their number gender and cases, Verbs. transitive and intransitive. The three tenses with their four forms.

The questions may be put in the form of

i Correction of number, etc.

ii Change of Voice, tense, forms and

iii Filling up of blanks.

3. Translation and Composition.

Translation of affirmative, negative and interrogative sentences in three tenses and four forms. The words involved should be from the vocabulary of the students taking care that the practice of idiomatic expressions be emphasised.

Practice in composition must be given on the lines mentioned under the head (1 & 2) In addition to this the students must know the use of the words and phrases in their own language They must also possess the ability to answer in writing Hindi questions as may be based upon the subject matter of the text and Rapid readers, They must know also how to develop stories from some given outlines.

The students must be able to write simple letters and applications for leave etc. to their relations, friends and authorities.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Descriptive essays on the following topice: (i) Some animals (as cow, elephant, dog, parrot, fly etc) (ii) Places of their interest (as their village or city, their School, playground and home) (iii) Natural Scences, (as Fields, hills etc.) Seasons and weathers (as Summer Winter and Rainy Seasons)

N. B.—At least 15 essays must be written by the Students in this class.

4. Conversation

The students must be able to have conversations among themselves or with the teacher regarding the various topics mentioned under the head 'Composition.'

हिन्दी

हिन्दी भाषा और साहित्य के ज्ञान और उनके प्रति सच्ची रुचि उत्पन्न करने के लिए विशेष प्रयत्न होना चाहिये। जो संस्कृता कक्षा में और प्रगति करे।

(क) मौखिक अभ्यास

मासिक पत्रों द्वारा हिन्दी भाषा और साहित्यय की प्रगति, प्रवृत्ति और गतिविधि से परिचयं दिलाना आवश्यक है। वाचनालय का पूर्ण उपयोग इस कक्षा में होना चाहिये। वादविवाद सम्भाषण अन्त्याक्षरी द्वारा विशेष सहायता ली जाती चाहिए।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ख) वाचन

(अ) पाठ्य पुस्तकों के रूप में गद्य और पद्य (प्राचीन और आधुनिक) की प्रतिनिधि-रचनाओं के दो संकलन होने चाहिये, जिससे हिन्दी भाषा तथा साहित्य के क्रम विकास का ज्ञान की हो सके।

(आ) प्राचीन और नवीन हिन्दी कविता की प्रतिनिधि दो काव्यकृतियाँ,

(इ) कहानी-संग्रह।

निम्नलिखित उपादानों से भाषा और साहित्य के ज्ञान वृद्धि में सहायता ली जानी चाहिये।

(१) हिन्दी-साहित्य के प्रसिद्ध लेखकों और कवियों के ग्रंथों तथा उनके साहित्यिक कार्य से परिचय पाना इष्ट होगा

(२) शब्दों के पर्याय, विपर्याय, भिन्न भिन्न अर्थ और उनके सूक्ष्म अन्तर का ज्ञान।

(३) मुहावरों, कहावतों, समस्त (समासयुक्त) पदों का प्रयोग और अर्थ,

(४) पद्यों की सान्वय व्याख्या और उनकी अन्तर्कथाएँ।

(५) अपठित पद्य और गद्य अवतरणों की सरल व्याख्या तथा उनपर प्रश्न

(ग) व्याकरण

पद-परिचय, वाक्य-विश्लेषण और पृथक्करण। स्वर-संधि, प्रत्यय तथा उपसर्ग।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(घ) काव्यांग

(१) पिङ्गल : यति-गति, मात्रा और गण के साथ चौपाई दोहा, रोला, कुण्डलिया, सोरठा, सवैया और कवित्त का ज्ञान–

(२) अलंकार : उपमा, रूपक, अनुप्रास यमक–

[ङ] लेखन

(अ) श्रुतिलेख— पठित पुस्तक के अनुरूप

(आ) स्वलेख—अपठित पद्य या गद्य अंश का सार और उस पर किये गये प्रश्नों का उत्तर सरल

(इ) सब प्रकार के पत्र

(ई) वर्णनात्मक, विवरणात्मक, सरल भावात्मक और विचारात्मक निबन्ध जैसे राष्ट्रीयता (हिन्दू-मुस्लिम एकता सामाजिक अधिकार और कर्त्तव्य)

(च) कवितापाठ तथा भाषण :—

(अ) कंठस्थ कविताओं का सस्वर और भाव-पूर्ण पाठ;

(आ) विषयों पर वाद-विवाद,

(इ) अन्त्याक्षरी,

(ई) संभाषण तथा अभिनय ।

२ : गणित

अंकगणित–

(१) पिछले कार्य की आवृत्ति तथा विस्तार;

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) चक्रवृद्धि व्याज, दशमलव तथा ऐकिक दोनों नियमों से।

(३) औसत लाभ हानि तथा प्रतिशत—इनके कुछ कठिन प्रश्न

(४) वर्गमूल पूर्ण तथा घनमूल—उत्पादकों द्वारा ;

(५) समय काम और गतिके प्रश्न (ऐकिक नियमके आधार पर)

(६) क्षेत्रफल—वर्गाकार तथा चतुष्कोण वस्तुओं का;

रेखागणित—

(१) पिछले कार्य की आवृत्ति तथा विस्तार;

(२) त्रिभुज तथा चतुर्भुजों का बनाना—दिये हुए नापों से;

(३) वृत्त में सम–त्रिभुज, तथा वर्ग बनाना (आकृतियाँ),

(४) वर्ग चतुर्भुज (समानान्तर) आयत तथा त्रिभुज और सम बहुभुज (६ भुजाओं तक) आकृतियाँ बनाना।

(५) प्रमेयोपपाद्य-साध्य-रेखा, उस पर आसन्न तथा सम्मुख कोण समान्त रेखाएं तथा उन पर बने कोण, बड़ी व छोटी भुजा तथा उसके सामने कोण, त्रिभुज के कोण, तथा उनकी अनुरूपता–(समानान्तर चतुर्भुजों के साध्यों से पहिले तक)–के सब साध्य अभ्यासों सहित।

(६) वर्गों तथा आयतों के क्षेत्रफल तथा गुर।

महाजनी-

पिछली आवृत्ति तथा– (१) रोकड़ बही व खाता बही–इसमें व्यक्तिगत तथा श्रीखाते

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) इन खातों का जमा खर्च तथा खतौनी
(३) तलपट (Trial Balance)

मौखिक-

(१) पिछला कार्य दोहराना तथा वेतन के गुर पर अधिक कठिन प्रश्न,
(२) क्षेत्रफल ब्याज आदि के गुर—मौखिक कार्य अधिक उपयोगी हो। रोजमर्रा काम में आनेवाले उदाहरणों का मौखिक हल।

संस्कृत

(क) लेखन—१ श्रुतिलेख, सुलेख
२ पुस्तकान्तर्गत कठिन शब्दों का वाक्य में प्रयोग

(ख) वाचन—पुस्तक के गद्य व पद्य अंशों का शुद्ध पाठ।

(ग) कवितापाठ—भिन्न भिन्न छन्दों के १२ पद्य प्रथम छः मास में और १३ पद्य शेष वर्ष में कण्ठस्थ करना।

(घ) अनुवाद—संस्कृत वाक्यों का हिन्दी में तथा हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद।

(ङ) रचना—१—पाठ्य पुस्तक के पाठों के आधार पर प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर लिखना।
२—पुस्तक में आई हुई कथाओं का सरल हिन्दी में और सरल संस्कृत में लिखना तथा मौखिक सुनाना।

(च) छन्द—२-अनुष्टुप, इन्द्रवज्रा, द्रुतविलम्बित, शिखरिणी, शार्दूल विक्रीड़ित आदि छन्दों का परिचय।

(छ) इतिहास—बाल्मीकि, कालिदास, विष्णुशर्मा आदि प्रमुख प्राचीन साहित्य-निर्माता विद्वानों का परिचय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ज) व्याकरण—१—सरल अजन्त तथा हलन्त शब्दों के और सर्वनामों के तीनों लिंगों के रूप।

२—कारकों और विभक्तियों का ज्ञान।

३—अव्ययों, उपसर्गों का परिचय।

४—व्यावहारिक १५० धातुओं के अर्थ और उनके लट् (वर्त्तमान) लङ् (भूत) लृट (भविष्यत) लोट (विधि व आशीष) लिङ् विधि रूपों का ज्ञान।

५—शब्दों का लिङ्ग परिवर्त्तन।

६—सामान्य सन्धियों। संधिविच्छेद।

३ सामाजिक विज्ञान

(क) इतिहास

१—पृथ्वी की उत्पत्ति व जीवों का क्रमिक विकास—

काल और स्थान—सौरमण्डल—पृथ्वी का जन्म तथा उसपर होनेवाले रूपान्तर—आदि प्राणतत्व का उदय—जीवों का क्रमिक विकास—कोयले का युग—चार तुषारकाल—सरीसृप जीवों की सृष्टि—प्रथम उड़नेवाले जानवर—आधुनिक युग—मनुष्य का पूर्व पुरुष—अर्द्ध-मानव—अवतारवाद और डार्विन के सिद्धान्त। पृथ्वी की नोटबुक।

२—आदि मानव सभ्यता का विकास—

सभ्यता का जन्म स्थान—प्रस्तर युग का मनुष्य—हथियार—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अग्नि का आविष्कार-विचारों का सूत्रपात-कृषि और पशुपालन-आदिम जातियों का विकास-भारत के मूल निवासी- आदिम खानाबदोश जातियाँ।

—संसार की प्रमुख प्राचीन सभ्यतायें--

सभ्यता का विकास और उसके इतिहास जानने के साधन सुमेरिया और प्राचीन मिश्र-प्राचीन भारत और चीन-द्रविड़जाति की सभ्यता-आर्यों का आगमन तथा जीवन-लेखन-प्रणाली का इतिहास।

४—भारतीय इतिहास—

(i) भूगोल-इतिहास का संबंध-इतिहास जानने के साधन-वैदिक सभ्यता व संस्कृति-उत्तर वैदिक काल में सामाजिक पतन-बौद्ध व जैन धर्मों का उदय और प्रभाव-मौर्य साम्राज्य-यूनानियों के आक्रमण-मेगस्थनीज का भारत वर्णन-कनिष्क गुप्त साम्राज्य-गुप्त काल में भारत की सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, और राजनैतिक अवस्था-फाहियान की भारत यात्रा-विदेशी जातियों का आगमन-गुप्त-साम्राज्य का पतन-हर्षवर्धन-ह्वाँनसाँग का भारत भ्रमण-राजपूतों की उत्पत्ति व प्रमुख राजवंश।

[ग]

(ii) इस्लाम का उदय और प्रचार-अरब और भारत के संबंध-मोहम्मद बिन कासिम और दाहिर-महमूद मोहम्मदगौरी के आक्रमण-राजपूत भारत की सामाजिक और राजनैतिक दशा-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मुसलमानों की विजय के कारण-मुस्लिम भारत के प्रमुख राजवंश और सुल्तानों का तिथिवार सामान्य परिचय-माध्यमिक काल में भारत की सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व धार्मिक अवस्था-हिन्दू और पठान संस्थाओं व दशाओं की तुलना-माध्यमिक काल में कला में कला और साहित्य-ऐतिहासिक परिस्थितियों व व्यक्तियों का देश की दशा पर प्रभाव।

(iii) बाबर और मुगल साम्राज्य की स्थापना-हुमाँयू और शेरशाह-शेरशाह के राजनैतिक विचार व कार्य-अकबर की विजयें और उदार नीति तथा उसका प्रभाव-उसके समय के प्रमुख व्यक्तियाँ व राज्यों का परिचय-उसके धार्मिक और सामाजिक विचार-अकबर की राजनैतिक संगठन-हिन्दू-मुस्लिम संस्कृतियों का सम्मिश्रण-मुगलकालीन सामाजिक, आर्थिक और धार्मिक दशा-कला कौशल, शिल्प, व्यापार व साहित्य की उन्नति। जहाँगीर और शाहजहाँ का शासन काल-औरंगजेब का राज्याभिषेक-धार्मिक कट्टरता का प्रभाव-राजपूत, मराठे और सिक्खों के उत्थान व विद्रोह-औरंगजेब के युद्ध और उसका साम्राज्य पर प्रभाव-मुगल साम्राज्य के पतन के कारण-विदेशी व्यापारियों का योरुप से आगमन और व्यापार।

(iii) योरोपियन जातियों का पारस्परिक व्यापारिक संघर्ष-पुर्तगाल उपनिवेश-अलबुर्क-व्यापारिक कंपनियों से राजनैतिक शक्ति में परिवर्तन-फ्रांस और अंग्रेजों के तीन कर्नाटिक युद्ध-अंग्रेजों की सफलता के कारण-बंगाल में अंग्रेज-क्लाइव-वारन् हेंस्टिग्ज।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

अंग्रेजी साम्राज्य का विस्तार–मराठों व मैसूर से युद्ध–हैदर अली और टीपू–इस्तमाररी बन्दोबस्त–वैलेजली और सहायक प्रथा–रणजीतसिंह–विलियम बैंटिङ्ग के सुधार–मराठों और राजपूतों का पतन–डलहौजी गोद प्रथा तथा उसके सुधार–१८५७ क असन्तोष और विद्रोह–प्रथम प्रयास की असफलता के कारण–शासन-विधान में परिवर्त्तन–प्रमुख वाइसराय–लार्डरिपन का स्थानीय स्वराज्य–कांग्रेस का जन्म और भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन का विकास–उसके प्रमुख नेता–गत महायुद्ध और भारत–महायुद्ध १६१४–१६ के पश्चात् का राष्ट्रीय जागरण–भारत और विश्व–शांति की समस्या ।

(ख) भूगोल

[१] प्राकृतिक भूगोलः–

(१) वायुमण्डलः– पृथ्वी पर भार कटिबन्ध फेरेल तथा बाइस बैलेट का नियम । हवायें (Winds) व्यापारिक, पछुवा, मानसून तथा जल व स्थल हवायें ।

(२) समुद्रः–समुद्र में खारापन । समुद्र का तापक्रम । समुद्र की लहरें व मुख्य धारायें तथा इनकी उपयोगिता ।

(२) संसार का भूगोल(निम्नलिखित) शीर्षकों के अनुसार

i जलवायु तथा जलवायु के प्रधान खण्ड

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ii) वनस्पति और इसकी आर्थिक उपयोगिता तथा मुख्य वनस्पति खण्ड।

(iii) कृषि उपज और खनिज पदार्थ तथा इनका आर्थिक महत्व

(iv) मुख्य उद्योग-धन्धे।

सूचना:-विद्यार्थियों को आवश्यक बातों को दुनियां की रूपरेखाओं में भरना आना चाहिये और अन्य क्रियात्मक ज्ञान होना चाहिये।

(v) कक्षा ५ और ६ के पाठ्यक्रम की आवृत्ति।

ग : सरल नागरिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र

१–नागरिक जीवन:—

नागरिक शास्त्र की परिभाषा—व्यक्ति और समाज—उनका अन्योन्याश्रित सम्बन्ध, नागरिक के कर्तव्य और अधिकार, राज्य, उसका उद्गम, राज्य और नागरिकों का सम्बन्ध, राज्य के अनेक प्रकार, (विशेषतः प्रजातन्त्रीय तथा स्थानीय स्वायत्त शासन) राज्य के कार्य,

२–भारतीय विधान की रूपरेखा—शासन व्यवस्था में पार्लियामेंट के काम-काज के व्यावहारिक शिक्षण के लिये कक्षा में एक धारासभा का निर्माण किया जाय।

३–अर्थशास्त्र—अर्थशास्त्र का विषय और उसकी परिभाषा—मनुष्य, उसकी आवश्यकताएँ, अर्थशास्त्र के अध्ययन की

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

आवश्यकता, मनुष्य जीवन में आर्थिक व्यवस्था का स्थान और उसका उद्देश्य, आदर्श, आर्थिक व्यवस्था।

सामन्तवाद में आर्थिक संगठन का अध्ययन, उक्त आदर्श के दृष्टिकोण से पूँजीवाद, समाजवाद और गांधीवाद का अध्ययन।

गृह विज्ञान ४:

१—स्वास्थ्य-रक्षा

हवा—स्वच्छ वायु की आवश्यकता, गन्दी हवा से खराबियाँ, मकान में स्वच्छ हवा का आवागमन।

पानी—मिलने के साधन (कुएँ, नदी, तालाब आदि) खराबियाँ, साफ करने के उपाय।

खाना—खाने के पदार्थ, पोषक तत्त्व, भिन्न-भिन्न खाने की चीजें और उनसे लाभ, दूध की उपयोगिता, खाने की चीजों व दूध को ठीक रखना, शरबत, चाय, आदि पीने की चीजें और मसाले।

कपड़े—सूती, ऊनी, इनकी उपयोगिता।

व्यायाम—खेल-कूद और मनोरञ्जन, मादक द्रव्यों से बचने की आवश्यकता, उनके प्रभाव, थूकना।

बीमारियों से बचने के उपाय—छूत से होनेवाली बीमारियाँ तपैदिक, दस्त, आँव, न्यूमोनिया, टाइफाइड, हैजा, प्लेग, खुजली, कोढ़ आदि।

२—शरीर-विज्ञान

मनुष्य के शरीर का ढाँचा, जोड़, स्नायु, नसें शरीर के भीतरी अवयव, हृदय, फेफड़ा, गुर्दा, तिल्ली आदि नाड़ी-संस्थान-

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

३—साधारण उपचार

नीम के पत्ते, अरंडी का तेल, सरसों का तेल, स्पिरिट, बोरिक एसिड, पोटाश, कपूर, रोगों के दर्द की दवा। पुल्टिस, प्लास्टर, सिकताव, बर्फ का इस्तेमाल। सोंठ, अदरख, हींग, हल्दी, जीरा, फिटकरी, प्याज, लहसुन का प्रयोग।

४—रोगी परिचर्या

बीमार का कमरा, बिस्तर, फर्नीचर, दवा, भोजन, पानी, आदि देना, कपड़े, बिस्तर बदलना, हाथ मुँह धोना, आराम और नींद का प्रबन्ध, छूत की बीमारियों से अहतियात, कमरे, कपड़े व बिस्तर को शुद्ध करना, थर्मामीटर, एनिमा बेण्डपैन, गर्मथैली, आइस कैप।

५—प्राथमिक उपचार

पिछले पढ़े हुए की आवृत्ति, विषका उपचार, घायल को लेजाना आदि, बेहोश होना, लू लगना, धूप लगना, जानवरों का डसना।

६—शिशुपालन

बच्चों की देख-रेख के साधारण नियम, खिलाना, सुलाना, बहलाना, कपड़े पहनाना, व्यायाम और सफाई।

७—गृह-प्रबन्ध

मकान चुनना, फर्नीचर सजाना, घर के कूड़े-करकट, गन्दे पानी आदि की व्यवस्था मक्खी, मच्छर, खटमल आदि न होने देने के उपाय।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

साधारण विज्ञान ५:

(क) भौतिक–विज्ञान [Physics]

(१) आपेक्षिक घनत्व [Relative Density] । ठोस और द्रवों का आपेक्षि घनत्व निकालना ।

(२) रोशनी । रोशनी के गुण । रोशनी की खासियत [Rectilineal propagation of light] पिन होल कैमरा [Pin hole camera] द्वारा शुक्ल बनाना । परिवर्त्तन [Reflection] प्लान मीरर [Plane Mirror] में तस्वीर बनाना ।

(३) गोलकार शीशे । [concave] और कानवेक्स [Convex] परिवर्त्तन और तस्वीर बनाना ।

(४) गर्मी । गर्मी कैसे चलती है ? संचालन [Conduction] संवाहन [Convection] और विकरण [Radiation] रोशनदान और संवाहन । थर्मस फ्लास्क [Thermos Flask] बनावट और कार्य्य-पद्धति ।

(५) बीजगणित का साधारण ज्ञान । जोड़, बाकी, गुणा भाग-ह्रास का गुणा-भाग आदि ।

(ख) रसायन विज्ञान [Chemistry]

(१) हवा । उसकी चीजें–उसकी भीतर की वस्तुऐं । वस्तुओं का जलना और जंग लगाना ।

(२) औक्सीजन [Oxygen] प्रयोगशाला में तैयार करना उसके गुणों का अध्यय । फायदे और उपयोग ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(३) पानी । उसके दो तत्त्व-औक्सीजन [Oxygen] और हाईड्रोजन [Hydrogen]। गर्म लोहे के बुरादे के ऊपर से भाफ गुजरने के बाद जो गैस बच रहती है उसकी परीक्षा करना ।

(४) पदार्थ । तीन तरह के पदार्थ । गर्मी पर उनका असर अवस्था में परिवर्त्तन । पदार्थ के साधारण गुण रोज काम में आनेवाले कुछ पदार्थों की परीक्षा ।

अंग्रेजी

The study of the text and rapid readers must be intensified in this and in the next class This must be carried on under the following heads :—

1. Reading and Explanation.

The reading does not only mean the reading of prose pieces with proper English accent but also recitation of poetical pieces with their particular rhythm.

The students should have a selection of the best ballads and lyrical poems from their text or elsewhere. Care should be taken to see that the poems selected from outside must be of their standard so as to be intelligible by them.

The students must possess the knowledge of the meaning and explanations of text.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Difficult words should be explained in simple English and where necessary in Hindi too.

The study of text must be done by the following method.

(i) Rendering of difficult pieces into English and Hindi and the use of difficult words in the students' own simple language.

(ii) Answering of questions based on the subject matter of the lessons in the text and rapid readers.

(iii) Explanation of prose and poetical pieces into simple prose with references to their contexts.

(iv) Explanation of figurative and idiomatic expressions and pharases into simple English and Hindi. Synonyms and antonyms of important English words and their different shades of meaning to be illustrated by their different uses.

(v) Prose order of the verses.

2. Grammar

Parts of speech and sub. classificatian of (i) Noun (ii) Pronoun, (iii) adjective, (iv) verb (v) adverb (vi) Preposition (vii) conjunction and (viii) interjectian with their number, gender, person case and relation. Parsing of words under the

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

above heads, Simple (Tabular) analysis of sentences. Interchange of direct and indirect forms of narration. Practice of the topics done in the previous class under this head.

3. Translation and Composition.

Translation of all the four kinds of sentences in the three tenses and four forms. The words involved should be from the vocabulary of the students taking care that the practice of idiomatic expression be emphasised.

Practice in composition under the heads (1) and (2).

In addition to this the students must know the use of words and phrases in their own English. They must also possess the ability to answer in writing such questions as may be based upon the subject matter of the text as well as rapid readers. They must know also how to develop stories from given outlines.

The students must be able to write simple letters containing a given subject and application for leave and ordinary business letters (e. g. order of books, invitations and matches).

Descriptive and narrative essays on the following topics :—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(i) Social functions of their interest (as Prize distribution, Annual day, Feast or Picnic)

(ii) important Festivals as Holi, Dashara, Raksha Bandhan, Dipavali.

(iii) Railway journeys and small excursions

(iv) Village, Fair, city, play or game.

(v) Biographical essays on great men (Ram, Krishan, Maharana Pratap Asoke, Gandhi etc.)

4. Conversation

Students must be able to have conversat-ons regarding current events of personal social and political interest or nature.

कक्षा ८ 'संस्कृता'

१ : हिन्दी

हिन्दी भाषा और साहित्य का ज्ञान और उसके प्रति सच्ची रुचि उत्पन्न करने के लिए विशेष प्रयत्न होना चाहिए।

(क) मौखिक अभ्यास—साप्ताहिक तथा मासिक पत्रों द्वार हिन्दी भाषा और साहित्य की प्रगति, प्रवृत्ति तथा गतिविधि से परिचय दिलाना आवश्यक है। वाचनालय का पूर्ण उपयोग इस कक्षा में भी होना चाहिए। सुविधा होने पर साहित्यिक समारोहों, उत्सवों और आयोजनों को स्वयं

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

संचालित करने और उनका प्रत्यक्ष अनुभव प्राप्त करने का अवसर मिलना चाहिए। वाद-विवाद, संभाषण, अंत्याक्षरी, सभा इत्यादि साधनों का उपयोग सफलतापूर्वक किया जा सकता है।

(ख) वाचन—

(अ) पढ़ने के लिए गद्य और पद्य का पृथक् संकलन होना चाहिये जिससे कवियों और लेखकों के परिचय के साथ साहित्य की प्रगति का भी ज्ञान हो सके।

(आ) प्राचीन और नवीन हिन्दी कविता की दो प्रतिनिधि काव्य-कृतियाँ।

(इ) एकांकी नाटक संग्रह अथवा कोई नवीन नाटक।

निम्नलिखित उपादानों से भाषा और साहित्य के ज्ञान की वृद्धि में सहायता की जानी चाहिये—

(१) हिन्दी-साहित्य के लेखकों (लल्लूजी लाल, सदल मिश्र, इंशा अल्ला खां, सदा सुखलाल, राजा लक्ष्मणसिंह, राजा शिवप्रसाद, भारतेन्दु, प्रतापनारायण मिश्र, बालकृष्ण भट्ट, बालमुकुन्द गुप्त, महावीरप्रसाद द्विवेदी, मिश्रबन्धु, वियोगी हरि, प्रेमचन्द, प्रसाद, सरदार पूर्णसिंह, राय कृष्णदास, श्यामसुन्दरदास, रामचन्द्र शुक्ल, जैनेन्द्र, महादेवी वर्मा, माखनलाल चतुर्वेदी, गुलाबराय, हरिशंकर शर्मा, श्रीराम शर्मा) और कवियों (सूर, तुलसी, कबीर, जायसी, मीरा, केशवदास, रसखान, सेनापति, बिहारी, देव, नरोत्तमदास,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0:In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

भूषण, भारतेन्दु, पद्माकर, अयोध्यासिंह उपाध्याय, रत्नाकर, सत्यनारायण कविरत्न, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी, गोपालशरण सिंह, प्रसाद, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', सुमित्रानन्दन पन्त, रामनरेश त्रिपाठी, गयाप्रसाद शुक्ल 'सनेही', वियोगी, सुभद्राकुमारी चौहान, महादेवी वर्मा, रामकुमार वर्मा, बच्चन, भगवती चरण वर्मा, दिनकर, सोहनलाल द्विवेदी, अंचल उदयशंकर भट्ट, 'प्रेमी', 'अज्ञेय', सुधीन्द्र, सुमित्राकुमारी सिन्हा, नरेन्द्र) की सरल प्रतिनिधि रचनाओं के द्वारा उनकी साहित्य में सेवाएँ, उनकी कला और शैली का ज्ञान,

(२) शब्दों के पर्याय, विपर्याय भिन्न-भिन्न अर्थ और उनके सूक्ष्म अन्तर का ज्ञान

(३) मुहावरों, कहावतों का अर्थ तथा प्रयोग,

(४) पद्यों की सान्वय व्याख्या और उनकी अन्तर्कथाएँ.

(५) अपठित गद्य और पद्य अवतरणों की सरल व्याख्या और उनपर प्रश्न।

(ग) व्याकरण—पद-परिचय, वाक्य-विश्लेषण और पृथक्करण, संधि, प्रत्यय, उपसर्ग, संधियाँ, संधियुक्त समास, ठेठा हिन्दी समास तद्धित, कृदन्त, वर्णों के उच्चारण-स्थान, वर्गीकरण

(घ) काव्यांग--

(१) पिंगल—मात्रा, गण, यति, गति के परिचय के साथ दोहा, चौपाई, रोला, कुण्डलिया, छप्पय, सोरठा, वीर, ताटंक गीतिका, हरिगीतिका, कवित्त, सवैया, द्रुतविलम्बित,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

मालिनी, शिखरिणी छन्दों और वृत्तों का ज्ञान।

(२) अलंकार—उपमा रूपक, यमक, अनुप्रास,श्लेष, उत्प्रेक्षा, भ्रांति, सन्देह, अतिशयोक्ति और अपन्हुति अलंकारों का परिचय

(३) नवरसों का साधारण परिचय।

(४ अभिधा, लक्षणा और व्यंजना शब्द शक्तियों का साधारण परिचय।

(ङ) लेखन (१) श्रुतिलेख (सुलेख सहित)

(२) स्वलेख

(i) अपठित गद्य तथा पद्य अंश का सार तथा उसपर किये गये प्रश्नों का उत्तर,

(ii) सब प्रकार के पत्र तथा प्रबन्ध

(च) कविता-पाठ तथा भाषण

(१) कंठस्थ कविताओं का सस्वर और भावपूर्ण पाठ।

(२) विषयों या समस्याओं पर वादविवाद।

(३) अन्त्याक्षरी।

(४) संभाषण तथा अभिनय।

(छ) सम्पादन

अपनी से नीची कक्षाओं के लिए जो मासिक पत्र निकले उसका स्वयं सम्पादन करने की योग्यता होनी चाहिये। लेखों की विषय-सूची इस प्रकार हो सकती है—

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(अ) सरल कहानियाँ, कविताएँ, एकांकी नाटक, लेख।

(आ) प्रान्त और देश पर स्वास्थ्य, शिक्षा, उद्योग, कला राजनीति सबन्धी लेख।

(इ देश-विदेश की सामाजिक, नैतिक और राजनैतिक समस्याओं पर सरल लेख।

(ई) प्रधान-प्रधान भाषणों, वक्तव्यों आदि का सार।

(उ) देश-विदेश के सामयिक प्रश्नों पर टिप्पणियाँ।

(ऊ) देश की साहित्यिक, सांस्कृतिक और राजनैतिक गतिविधि की डायरी।

२: गणित

अङ्कगणित—

(१) पिछले कार्य की आवृत्ति तथा विस्तार

(२) अनुपात, समानुपात तथा त्रैराशिक

(३) घनफल तथा क्षेत्रफल के कठिन प्रश्न

(४) समय, काम तथा गति के प्रश्न (त्रैराशिक से)

(५) चक्रवृद्धि ब्याज-समय, दर तथा मूलधन निकालना

(६) सरल बीजगणित [धन ऋण-गुणा-भाग के नियम का ज्ञान और रूपीकरण का अंगणित में उपयोग]

रेखागणित—

(१) कक्षा ७ में दिये हुए तथा उससे पहले की सब बनावटों की आवृत्ति तथा विस्तार

(२) त्रिभुजों और चतुर्भुजों की अधिक कठिन बनावटें

(३) चतुर्भुजों तथा बहुभुजों समान क्षेत्रफल के त्रिभुजों में परिवर्तन

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) त्रिभुजों तथा अन्य क्षेत्रों का क्षेत्रफल

(५) प्रमेयोपपाद्य साध्य (कक्षा ७ से आगे) समानान्तर चतुर्भुजों, भुजाएँ, कोण, कर्ण से बने त्रिभुज तथा आयत; समानान्तर चतुर्भुज व त्रिभुजों के क्षेत्रफल समकोण त्रिभुज के कर्ण पर का वर्ग दूसरी भुजाओं पर के वर्गों के बराबर तथा इन सबके विलोम प्रमेयोपपाद्य साध्य— अभ्यासों सहित, निधि (Locus) छोड़कर)

महाजनी—

पिछले कार्य को दोहराना

मौखिक—

पिछले सारे कार्य की आवृत्ति—अधिक कठिन प्रश्नों का ज़बानी हल—ब्याज, तोले, गज, मन तथा वेतन और क्षेत्रफल। दैनिक जीवनोपयोगी कठिन प्रश्नों के हल पर अधिक ध्यान दिया जाय।

संस्कृत

(क) लेखन— (१) श्रुतलेख, सुलेख

(२) पुस्तक में आये कठिन शब्दों और वाक्यांशों का वाक्यों में प्रयोग करना,

(ख) वाचन—अपनी पुस्तक के गद्य और पद्य का शुद्ध पाठ

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(ग) **कवितापाठ**—भिन्न भिन्न छन्दों के १२ पद्य प्रथम छः मासों में तथा १२ पद्य शेष वर्ष में कंठस्थ करना।

(घ) **अनुवाद**—संस्कृत के वाक्यों का हिन्दी में और हिन्दी के वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद करना।

(ङ) **रचना**—(१) पाठ्यपुस्तक में आये हुए पाठों में से किये गये प्रश्नों का संस्कृत में उत्तर देना।

(२) पुस्तक में आई हुई कथाओं को हिन्दी तथा संस्कृत में लिखना व सुनाना।

(३) किसी वस्तु, प्राणी या परिचित विषय को सरल संस्कृत वाक्यों में वर्णन करना

(च) **छन्द**—अनुष्टुप. इन्द्रवज्रा, उपेन्द्रवज्रा, वंशस्थ. मालिनी शार्दूलविक्रीडित आदि वृत्तों का उदाहरण सहित लक्षण।

(छ) **इतिहास**—व्यास, भास, भारवि, भट्टी, भवभूति, माघ श्रीहर्ष, बाण आदि संस्कृत कवियों का सामान्य परिचय

(ज) **व्याकरण**—(१) अजन्त और हलन्त विशेष शब्दों के तथा सर्वनामों के तीनों लिंगों में रूप

(२) व्यावहारिक २५० धातुओं के अर्थ सहित लट्, लोट्, लङ्, लिङ्. लृट्, लृङ् के रूपों के साथ लुङ्, लिट्. लुट्, आशीर्लिङ् का परिचय

(३) शब्दों का लिंग-परिवर्त्तन।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(४) त्वा, तुमुन्, शतृ, टाप् ङीप् णिति, अण्, तथा व्यवहारोपयोगी सामान्य तद्धित प्रत्यय जैसे अपत्यार्थ में अण् विकारार्थ में मयट्, अतिशयार्थ में इष्ठन् आदि का परिचय

(५) सरल अच्सन्धि जैसे सवर्दीर्घ, यण् सन्धि, अयवायान् आदेश, विसर्गसन्धि हलसन्धि का ज्ञान।

३ : सामाजिक विज्ञान

(क) इतिहास

विश्व इतिहास परिचय:—

१ **मिश्र, बेबिलन और एशिया के साम्राज्य:**—इन साम्राज्यों का उदय, राजधानियाँ व प्राचीन नगर-नेता-राजवंश का उत्थान और पतन-प्रमुख राजा तथा उनके संक्षिप्त विवरण-सामाजिक संगठन, कृषि और व्यापार, घरेलू जीवन, धार्मिक विचार, स्त्रियों की दशा-राजनैतिक और सैनिक संगठन-शिक्षा, साहित्य और कला-कौशल-मानव जाति के विकास में उनका भाग-भारतीय वैदिक अवस्था से समानता व अन्तर।

२ **प्राचीन यूनान, ईरान और चीन:**—साम्राज्य तथा नगर-राज्य-चीन का प्रथम सम्राट् याओ तथा उसके समय का चीन-शैङ्ग और चौ वंश-शिह-हाङ्गती द्वारा चिन वंश की स्थापना-चीन की प्रसिद्ध दीवार का निर्माण-चिन वंश और

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

हूण आक्रमण–हान वंश और उसका पतन–योरुप और एशिया की आर्य्य जातियाँ–नगर राज्यों की स्थापना-ईरानी साम्राज्य का उदय और विकास-यूनान के नगर–राज्यों का विकास तथा उनके नेता–फारस के सम्राट सीएकुरीज, साइरस और कैम्बसिस् की विजयें-दारा प्रथम का साम्राज्य–ईरान और यूनान की प्रसिद्ध लड़ाइयाँ-ग्रीक संस्कृति और वैभव-सिकन्दर का साम्राज्य-इन देशों की विशेष देन तथा भारत से तुलना।

(३) रोम और कार्थेज:—रोम और कार्थेज नगर राज्यों का विकास और विस्तार–रोम कार्थेज वैमनस्य–तीन प्यूनिक युद्धों का परिचय तथा परिणाम–रोमन साम्राज्य- जूलियस सीज़र-रोमन जनसाधारण का जीवन–प्रमुख रोमन सम्राटों का सामान्य ज्ञान-रोमन साम्राज्य का पतन–यहूदियों का प्राचीन इतिहास तथा उनके विचार–ईसा और ईसाईमत- 'पवित्र रोमन साम्राज्य' की स्थापना और विकास।

(४) मध्यकालीन योरुप और एशिया:—इस्लाम का उदय–मुहम्मद साहब और उनके उत्तराधिकारी-इस्लाम के सिद्धान्त–एशिया और योरुप के इस्लामी साम्राज्य-पवित्र रोमन साम्राज्य और धर्म–युद्ध- योरुप की सामन्त प्रथा- स्वतन्त्र राष्ट्रों की स्थापना–तुर्कों का योरुप में पदार्पण- मध्य-कालीन योरुप की सामाजिक, धार्मिक, आर्थिक, और राजनैतिक अवस्था– मध्य युग का अन्त।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(५) **संसार का आधुनिक युग** :— योरुप के नवजागरण के कारण– धार्मिक सङ्घर्षों का युग– धर्मसुधार की लहर– राष्ट्रीयता का उदय– सामंत-प्रथा का अंत– विभिन्न देशों में धार्मिक आंदोलन– तीसवर्षीय युद्ध और उसके बाद– निरंकुश शासन का दौरदौरा– लुई चौदहवाँ–सामुद्रिक शक्ति का विकास और उपनिवेश–अमेरिका का स्वातंत्र्य-संग्राम –फ्रांस की राज्य क्रांति–नैपोलियन–वियना की काँग्रेस–योरुप का क्रांतियुग–१८३० और १८४८ में योरुप के देश–तुर्की का पतन और पूर्वी प्रश्न राष्ट्रीयता का उदय और सफलता–व्यावसायिक क्रान्ति तथा संसार पर उसका प्रभाव–समाजवाद का जन्म–कार्ल मार्क्स और अन्तर्राष्ट्रीय मजदूर संगठन–इटली और जर्मनी की स्वाधीनता व संगठन का इतिहास-प्रथम महायुद्ध के पूर्व का योरुप-प्रथम महायुद्ध और उसका परिणाम- 'राष्ट्रसङ्घ'

(६) **वर्त्तमान जगत**:–प्रथम महायुद्ध के पश्चात् का संसार–विविध वादों का तुलनात्मक ज्ञान–आधुनिक युग के निर्माता–द्वितीय महायुद्ध के कारण और परिणाम–विश्व-शांति की समस्या–भारत और अन्तर्राष्ट्रीय राजनीति।

(ख) भूगोल

(१) प्राकृतिक भूगोल:—

समुद्र — ज्वार भाटा– इसकी उत्पत्ति का कारण और परिणाम (इसका साधारण ज्ञान)

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) संसार का भूगोलः—

(निम्नलिखित शीर्षकों के अनुसार)

(१) आवागमन के साधन-जल स्थल व वायुमार्ग।

(२) अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार।

(३) प्रत्येक देश का राजनैतिक भूगोल तथा उसका आधुनिक संक्षिप्त इतिहास।

(४) प्रत्येक देश के मुख्य नगर व बन्दरगाहों की प्रसिद्धि।

(५) संसार के भिन्न भिन्न देशों के लोगों का जीवन और उनके रहन सहन,-खान-पान,-वेश भूषा तथा सामाजिक जीवन पर वहाँ की भौगोलिक परिस्थितियों का प्रभाव।

सूचना—विद्यार्थियों को आवश्यक बातों को दुनियाँ की रूपरेखा में बताना आना चाहिये तथा अन्य क्रियात्मक ज्ञान होना चाहिये।

(६) कक्षा ५, ६, औ ७ के पाठ्यक्रम की आवृत्ति।

(ग) सरल नागरिक शास्त्र तथा अर्थशास्त्र

(१) नागरिक शास्त्र—

संसार के प्रमुख शासन-विधानों की रूपरेखा का अध्ययन—जैसे इंगलैंड, अमेरिका रूस, चीन तथा चुनाव की विभिन्न पद्धतियाँ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(२) अर्थशास्त्र--

प्राचीन भारतीय आर्थिक संगठन-भारतीय आर्थिक संक्रांति पर पश्चिमी पूँजीवाद का प्रभाव-उसकी वर्तमान स्थिति और उसके भावी नव-निर्माण की रूपरेखा।

४: गृहविज्ञान

(१) स्वास्थ्यरक्षा—

पिछले पढ़े हुए को दोहराना। विषय के दूसरे अं।को समझ सकने लायक मोटी मोटी बातें।

(२) शरीर-विज्ञान—

पिछले पढ़े हुए को दोहराना, सभी स्थानों का विस्तृत विवरण, तथा उससे संबंधित मोटी मोटी बातें बताई जाँय।

(३) साधारण उपचार—उल्टी कराने तथा रोकने की साधारण ओषधियाँ. कॉडलिवर आयल. वाष्प सेवन (Inhalation) धूम्रपान (Fumigation) मरहम लेप, अमोनिया, बाल-चिकित्सा।

(४) रोगी-परिचर्या—सैद्धांतिक ज्ञान (थ्योरी) के साथ साथ व्यावहारिक ज्ञान भी होना अनिवार्य है।

कमरा-बिस्तर, फर्नीचर, प्रकाश, गर्मी तथा वायु का प्रबन्ध।

परिचारिका-स्वास्थ्य, पोशाक, कर्त्तव्य, गुण बीमार के प्रति व्यवहार।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

बाह्य उपचार—पुल्टिस, प्लास्टर आइसबैग

स्नान—गर्म, ठण्डा, स्पंज,

पथ्य— बनाना और देना

दवा—चार्ट, कपड़े, बिस्तर बदलना।

थर्मामीटर, पिचकारी (Syringe) तौलने की मशीन आदि

छूत की बीमारियाँ—परिचर्या रोग मुक्त होने पर convalescence) शुद्धि करना (Disinfection) अच्छे होने पर खाना—कपड़ा आराम मिलने-जुलनेवाले

(५) प्राथमिक उपचार-तिकोनी तथा लपेटी पट्टियां (Triangular and Roller Bandages) खून बहना, डूबना, जलना, मोच आना, हड्डी टूटना हड्डी उतरना, बेहोश हिस्टीरिया, दम घुटना, आँख नाक कान गले में कुछ अटक जाना, । पागल कुत्ते का काटना, साँप डसना ।

(६) शिशु—पालन—प्रसव तथा नवजात शिशु, प्रसूता के कर्त्तव्य (पहले, उस समय और बाद में) जन्म से, तीन साल तक के बच्चे का खाना, सोना और व्यायाम, कपड़े सफाई, वातावरण, अच्छी आदतें डालना।

बाल- उपचार और बच्चों को होनेवाली खास खास बीमारियाँ।

(७) गृह—प्रबन्ध— मकान बनवाना, कमरों का विभाजन, सामान इकट्ठा करना और जँचाना, घर की सफाई और इस काम

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

में आनेवाली वस्तुएँ। पालिश, कूड़े-करकट की व्यवस्था, मक्खी व मच्छरों से रक्षा।

रसोईघर—सफाई, सादा भोजन, बर्त्तनों की सफाई, गृहिणी का कार्यक्रम, खाली समय का उपयोग, हिसाब रखना, धन जमा करना, बैंक, तिजोरी इत्यादि। डाक, तार, रेलवे टाइमटेबुल इत्यादि सबकी बातें, खाना परोसना, स्टोर रखना, अचार आदि बनाना।

(८) बाल-मनोविज्ञान—क्रिया, प्रतिक्रिया, पीटना, धमकाना, रुचि वातावरण, नई बात सिखाने में रुचि पैदा करने के तरीके। आदतें बनाने के मुख्य तरीके, अत्यधिक प्यार से हानियाँ, तिरस्कार व अपमान का प्रभाव, सहानुभूति, बच्चों को कार्य में लगाये रखने के साधन, बच्चे की हैसियत समझकर उसकी जरूरी बातों का ध्यान, बच्चों के प्रश्नों का समाधान, रोजमर्रा के बर्ताव की जानकारी।

५ : विज्ञान

(१) भौतिकविज्ञान Physics

(१) गैस (gas) और द्रव का दबाव। साधारण प्रयोगों द्वारा प्रदर्शन। वायुमण्डल का दबाव। बैरोमीटर (Brometer) आर्कमिडीज का सिद्धांत। सिद्धांत का तैरने और डूबनेवाली वस्तुओं पर असर। आर्कमिडीज सिद्धांत द्वारा आपेक्षिक घनत्व निकालना। तैरने का सिद्धांत। हाईड्रोमीटर(hydro meter)और लेक्टोमीटर (lacto meter)

(२)रोशनी, रोशनी का मुड़ना।(Refraction of Light)सूर्य का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

स्पेक्ट्रम (Spectrun) यानी सात रंगों का प्रदर्शन। छाया। सूर्य और चन्द्रग्रहण। लेंस (Lens) दूरबीन और खुर्दबीन की बनावट और सिद्धांत। आँख का लेंस। आंख का अध्ययन। चश्मा का प्रयोग और फायदा।

(३) आवाज़। आवाज की लहरें-आवाज का स्वभाव और गुण। ग्रामोफोन (gramophone) की बनावट और सिद्धांत।

(४) बिजली। दो तरह की बिजली-घर्षण शील और धारावाही (Frictional and Current) आकाश में बिजली चमकना और बादल गरजना क्यों और कैसे ? इमारतों की बिजली के चालक (Conductors) द्वारा कैसे रक्षा होती है ? वोल्टाइक सेल (Voltaic cell) लेकलेंची सेल (Lechlanche (Cell) से परिचय। बिजली द्वारा कलई कैसे होती है ? बिजली द्वारा चुम्बक बनाना। बिजली की मदद से रोशनी कैसे मिलती है ? गर्मी कैसे बनती है। बिजली की घंटी कैसे बजती है और तार कैसे जाते हैं ? रेडियो और एक्सरे क्या है और क्या सिद्धांत है ?

(२) रासायनिक विज्ञान (chemistry)

(१) कारबन (carbon) कोयला, लकड़ी, हीरा, काला पत्थर (Graphite) और चारकोल (charcoal) में कारबन है। कारबन डाइऑक्साईड (carbon dioxide) का

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

तैयार करना और उसके गुण सांस जो मुंह से बाहर निकलती है उसमें भी कारबन डाइ औक्साइड है। प्रकृति के अन्दर कारबन डाइ ओक्साइड का कार्य

(२) हाइड्रोजन (hydrogen) हवा का एक तत्व। पानी का एक तत्व—गैस का बनाना और गुणों का अध्ययन गैस का उपयोग।

(३) चिन्ह (Symbols) गुर (Formulae) और समीकरण (Equation) परमाणु (Atoms), अणु (Molecules) तत्व (Elements) यौगिक (Compounds) आदि।

(४) साधारण तेजाब, खार और एल्केलीज(Alkalies)। उनके गुण।

५ : अंग्रेजी

The study of the text and the rapid readers must be carried on under the following heads.

1. Reading and Explanation.

The reading includes the reading of prose pieces with proper accent and the recitation of poetical pieces with their proper rhythm. The students should have the selection of the best poems (ballads or lyrical) from the text or elsewhere. Care should be taken that the poems

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

selected from outside must be of such a standard as to be intelligible by them.

The student must possess the knowledge of the meaning and explanation of the text. Difficult words should be explained in simple English and where necessary in Hindi too.

The study of the text must be done by the following methods :

(i) rendering of difficult pieces into English and Hindi and the use of difficult words in the student's simple language.

(ii) answering of questions based on the subject matter of lessons in the text and rapid readers.

(iii) Explanation of prose and poetical piece into simple prose with references to their contexts.

(iv) Explanations and uses of figurative and idiom atic expressions and phrases into simple English.

(v) Synonyms and antonyms of important words and their different shades of meaning to be illustrated by their different uses.

(vi) Prose order of the verses.

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

2. Grammar.

In addition to the course prescribed in the previous class the following knowledge is required.

Parsing of all parts of speech, Clause analysis of sentences. Parsing of Gerunds and Infinitives.

3. Translation and Composition.

Translation of all the four kinds of sentences as in the previous class.

Practice in Composition as under the head (1) and (2).

The students will be expected

(i) to answer all kinds of questions involving the sound knowledge of the subject matter in text the as well as in the rapid readers,

(ii) to write letters on given topics to their relations, friends, editors or authorities.

(iii) to write descriptive, narrative and simple reflective essays on the following topics:

(a) Social functions :—(a) Conferences,

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

(b) Festivals and celebrations, as Independence Day, National week and others,

(c) Journeys and Voyages.

(d) Exhibitions, Museums, Public Parks etc

(e) Biographical essays on great men and women of the world (as Ram, Krishna, Gandhi, Mohammed, Christ, Buddha, etc.)

(f) autobiographical essays on common things as Rupee, Cloth, Book.

(g) their personal experiences' imaginations feeling etc.

4. Conversation

Students must be able to have conversation regarding simple events of personal, social and political nature. and on simple religious literary or cultural topics.

———

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi

CC0.In Public Domain. Digitized by Sarayu Trust/eGangotri

प्रकाशक—
आचार्य, वनस्थली विद्यापीठ
वनस्थली (जयपुर)

मूल्य ।।।)

मुद्रक—
दी प्रिंटर्स एण्ड पब्लिशर्स लिमिटेड,
जयपुर ।

Ganesh Varni Digambar Jain Institute, Naria, Varanasi